आज के प्रसिद्ध शायर

बशीर बद्र

ग़ज़लें, नज़्में, शे'र और जीवनी

संपादक

कन्हैयालाल नंदन

"मैं ग़ज़ल का आदमी हूँ—ग़ज़ल से मेरा जनम-जनम का साथ है—ग़ज़ल का फ़न मेरा फ़न है—मेरा तजुर्बा ग़ज़ल का तजुर्बा है।"

एक अजीब शान और धूम से बशीर बद्र ग़ज़ल की दुनिया में आये लेकिन इस पर भी बड़े सर्दो-गर्म मौसम गुज़रे, तब वो यहाँ तक पहुँचे हैं।

—प्रोफेसर गोपीचन्द नारंग

नई ग़ज़ल पर किसी भी उनवान से गुफ़्तगू की जाये, बशीर बद्र का ज़िक्र ज़रूर आयेगा। वो एक सच्चे और ज़िन्दादिल शायर हैं।

—निदा फ़ाज़ली

ग़ज़लगो की हैसियत से बशीर बद्र की सलाहियतों पर ईमान न लाना कुफ़्र है।

—मोहम्मद हसन

उनकी ग़ज़ल का शे'र सिर्फ एक खयाल नहीं रह जाता, हादसा भी बन जाता है, अफ़साना भी। मैं बशीर बद्र का बहुत बड़ा फैन हूँ।

—गुलज़ार

आज के प्रसिद्ध शायर

बशीर बद्र

चुनी हुई नज़्में, ग़ज़लें, शे'र और जीवन-परिचय

संचयन, संपादन
कन्हैयालाल नंदन

राजपाल

ISBN: 9789350640753
संस्करण: 2016 © बशीर बद्र
BASHIR BADRA (Life-Sketch and Poetry)
Edited by Kanhaiyalal Nandan

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791
e-mail: sales@rajpalpublishing.com
www.rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

ग़ज़ल की दुनिया का एक ज़रूरी नाम डॉ. बशीर बद्र

जनाब बशीर बद्र साहब को सौ फ़ीसदी ग़ज़ल का शायर माना जाता है। उन्होंने खुद भी लिखा है कि “मैं ग़ज़ल का आदमी हूँ। ग़ज़ल से मेरा जनम-जनम का साथ है। ग़ज़ल का फ़न मेरा फ़न है। मेरा तजुर्बा ग़ज़ल का तजुर्बा है। मैं कौन हूँ? मेरी तारीख़ हिन्दुस्तान की तारीख़ के आसपास है।”

उनके इस इक़बालिया बयान पर मैं कुछ आगे कहूँ, एक वाक़या बयान कर देना चाहता हूँ। हिन्दी के मशहूर अफ़सानानिगार हैं कमलेश्वर साहब। खुद बहुत बड़े सम्पादक रह चुके हैं, मीडिया की मानी हुई हस्ती हैं। उनसे एक इन्टरव्यू के दौरान किसी ने पूछ लिया कि हुज़ूर, आपकी बातचीत हमें इतना पीछे ले जाने को विवश करती है कि मन होता है, आपसे पूछूँ कि आपकी उम्र क्या है?

कमलेश्वर जी ने छूटते ही कहा: ‘मेरी उम्र है पाँच हज़ार पचपन साल।’

सवाल पूछने वाला चकरा गया: सो कैसे?

“वह ऐसे कि पाँच हज़ार साल की मेरी सभ्यता और पचपन साल का उसमें मेरा ज़ाती तजुर्बा जुड़ गया, और इस तरह मेरी सच्ची उम्र हो गई पाँच हज़ार पचपन साल।” उन्होंने कहा।

बशीर बद्र अपने आपको उसी तरह ग़ज़ल की लम्बी परम्परा से जोड़कर चलने में यक़ीन करते हैं। इस ऐतबार से वे अपने आपको आर्य, द्रविड़, अरबी, ईरानी और मंगोली रवायतों का नुमाइन्दा मानते हैं।

...और आज वे जहाँ अपने को देखते हैं वहाँ अदब, कल्चर और तहज़ीब को पूरब और पश्चिम में भले बँटा हुआ देखा जाता है लेकिन उनके हिसाब से वे एक दूसरे से अलग नहीं हैं। उनमें यक्सानियत है। उनकी ग़ज़लों का जब समग्र संकलन छपा तो उसका नाम उन्होंने रखा ‘कल्चर यक्सां’। उनके लिए “आज की दुनिया इंसानियत का एक तनावर दरख़्त है, जिसमें हज़ारों छोटी-बड़ी शाखें हैं। हर शाख़ गोया एक मुल्क है। मेरा वतन भी उस तनावर दरख़्त (दुनिया) की एक सरसब्ज़ और दिलकशतरीन झूमती शाख़ है जो मुझे अज़ीज़तर है। लेकिन मुझे और शाखों और पत्ते-पत्ते से मुहब्बत है। ...और जो मेरे वतन और मेरी दुनिया का दुश्मन है, वह मेरा और इंसानियत का दुश्मन है।” (**मैं, मेरा फ़न, मेरा तजर्बा**: बशीर बद्र 1962)

इस हिसाब से वे इन्सानियत के लम्बे सफ़र में ग़ज़ल के साथ सारे जहान की खूबसूरती, सारी दुनिया के सुख और दुख और सोच की बुलन्दियाँ पिरोई हुई देखने के आदी हैं। अगर

ग़ज़लों में सारी दुनिया के ग़मों को साथ लेकर चलने की सलाहियत नहीं है, तो वे कहते हैं: “मैं पहला आदमी हूँ, इन्हें ग़ज़ल मानने से इन्कार करता हूँ।”

ग़ज़ल से अपना जनम-जनम का रिश्ता बताने वाला शायर ग़ज़ल की रूह में किस हद तक इन्सानियत का दर्द, उसकी मुहब्बत, उसकी जद्दोजहद, उसकी ख़्वाहिशात और उसकी हासिलत या नाकामियों की बुलन्दियों को पिरोया हुआ देखना चाहता है, यह बताने की ज़रूरत नहीं रह जाती। ग़ज़ल के एक-एक शेर से उनकी यह चाहत जुड़ी हुई है कि उसे दुनिया के किसी भी हिस्से में पढ़ा जाए, पढ़ने वाले को वह अपनी दास्तान मालूम हो। इस लिहाज़ से डॉ. बशीर बद्र की ग़ज़लें और उनके अशआर कोलकाता और केलीफोर्निया से हज़ारों-हज़ारों मील के फ़ासले के बावजूद एक तरह से अपनाए गए मिलते हैं।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो।
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए।

उनका यह शेर दुनिया के हर कोने में पहुँचा हुआ है। कई बार तो लोगों को यह नहीं मालूम होता कि यह शेर बशीर बद्र साहब का लिखा हुआ है मगर उसे लोग उद्धृत करते पाए जाते हैं। यही नहीं, उनके सैकड़ों अशआर इसी तरह लोगों की ज़बान पर हैं। कुछ को यहाँ इसलिए पेश कर रहा हूँ ताकि आप साहिबान को खुद उन्हें पहचानने का सुख मिल सके। इनमें तजुर्बों से निकली नसीहत भी है, एक आत्मीय संवाद भी।

कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नए मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो

•

दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुंजाइश रहे
जब कभी हम दोस्त हो जाएँ तो शर्मिन्दा न हों

•

मुसाफ़िर हैं हम भी मुसाफ़िर हो तुम भी
किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी

•

दुश्मनी का सफ़र इक क़दम दो क़दम
तुम भी थक जाओगे हम भी थक जाएँगे

•

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यों कोई बेवफ़ा नहीं होता

•

जी बहुत चाहता है सच बोलें
क्या करें हौसला नहीं होता

•

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना
जहाँ दरया समन्दर से मिला, दरया नहीं रहता

•

हम तो दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है
हम जहाँ से जाएँगे, वो रास्ता हो जाएगा

•

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीं
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

किसी भी शेर को लोकप्रिय होने के लिए जिन बातों की ज़रूरत होती है, वे सब इन अशआर में हैं। ज़बान की सहजता, जिन्दगी में रचा-बसा मानी, दिल को छू सकने वाली संवेदना, बन्दिश की चुस्ती, कहन की लयात्मकता—ये कुछ तत्व हैं जो उद्धरणीयता और लोकप्रियता का रसायन माने जाते हैं। बोलचाल की सुगम-सरल भाषा उनके अशआर की लोकप्रियता का सबसे बड़ा आधार है। वे मानते हैं कि ग़ज़ल की भाषा उन्हीं शब्दों से बनती है जो शब्द हमारी ज़िन्दगी में घुल-मिल जाते हैं। 'बशीर बद्र समग्र' के सम्पादक बसन्त प्रताप सिंह ने इस बात को सिद्धान्त की सतह पर रखकर कहा है कि "श्रेष्ठ साहित्य की इमारत समाज में अप्रचलित शब्दों की नींव पर खड़ी नहीं की जा सकती। कविता की भाषा शब्दकोषों या पुस्तकों-पत्रिकाओं में दफ़्न न होकर, करोड़ों लोगों की बोलचाल को संगठित करके और साधारण शब्दों की जीवित और स्पंदनशील रगों को स्पर्श करके ही बन पाती है। यही कारण है कि आजकल बोलचाल और साहित्य दोनों में ही संस्कृत, अरबी और फ़ारसी के क्लिष्ट और बोझिल शब्दों का चलन कम हो रहा है। बशीर बद्र ने ग़ज़ल को पारम्परिक क्लिष्टता और अपरिचित अरबी-फ़ारसी के बोझ से मुक्त करके जनभाषा में जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया है। बशीर बद्र इस ज़बान के जादूगर हैं।"

ज़बान की यह जादूगरी भी उन्होंने तजर्बे से हासिल की है। जब वे अरबी-फ़ारसी के घर से निकल कर आए तब उन्हें यह हासिलत हुई कि ग़ज़ल को जन-जन तक पहुँचाने के लिए उसे अरबी-फ़ारसी के बोझ से अगर बचाया न गया तो ग़ज़ल किताबों में दबकर रह जाएगी। 'इकाई' उनका पहला संकलन था जिसमें बोझिल शब्दों से लदी-फँदी ग़ज़लों की मात्रा खासी थी:

वारिसे मुल्के ग़ज़ल रोए तो रो लेने दो
गुस्ले अस्कीं से हुआ करती है तहरीरे-सुख़न।

•

ज़ेफ़र्क ताब क़दम एक मौज ए मैनाव
तकल्लुमश कि बजे चाँदनी में सितार।

•

जमी है देर से कमरे में ग़ीबतों की नशिस्त
फ़ज़ा में गर्द है माहौल में कदूरत है।

•

क्या हुआ आज क्यों खैम-ए-ज़ख़्म से
कज़-कुलाहाने-ग़म क्यों निकलने लगे।

यानी बिना लुग़त के पन्ने पलटे किसी मिसरे का मानी पकड़ पाने में अहम परेशानी खड़ी हो जाए। लेकिन वे आगे चलकर कौन-सी ज़बान अपनाएँगे, इसके संकेत ‘इकाई’ से ही मिलने लगे थे जो ‘आमद’ तक आते-आते निखार पा गए। इस सिलसिले में डॉ. बशीर बद्र का कहा क़ाबिले-ग़ौर है: “किताब से ग़ज़ल की ज़बान नहीं सीखी जा सकती। ग़ज़ल की ज़बान से चुपके-चुपके किताब तकवीयत पाती है।”

उन्होंने अपनी बात को और आगे ले जाते हुए ग़ज़ल के फ़न की खूबसूरती को नए बिम्ब दिए हैं। उनका कहना है: “ग़ज़ल चाँदनी की उँगलियों से फूल की पत्तियों पर शबनम की कहानियाँ लिखने का फ़न है। और ये धूप की आग बनकर पत्थरों पर वक्त की दास्तान लिखती रहती है। ग़ज़ल में कोई लफ़्ज़ ग़ज़ल का वकार पाए बग़ैर शामिल नहीं हो सकता। आजकल हिन्दुस्तान में अरबी-फ़ारसी के वही लफ़्ज चलन-बाहर हो रहे हैं जो हमारे नए मिज़ाज का साथ नहीं दे सके और उसकी जगह दूसरी ज़बानों के अल्फ़ाज़ उर्दू बन रहे हैं।”

डॉ. बशीर बद्र ने उर्दू ग़ज़ल को दूसरी ज़बानों के अल्फ़ाज़ लेकर सँवारने में अपने समय के तमाम समकालीन शायरों-अदीबों से ज़्यादा महारत हासिल की है। इससे उर्दू ग़ज़ल की लफ़्ज़ियात (शब्दावली) में ख़ासा इज़ाफा हुआ। भले ही बाज़ मुकाम पर उनके इस हुनर ने ग़ज़ल के हुस्न को नुकसान भी पहुँचाया है लेकिन ऐसा कभी-कभी ही हुआ है और जब ऐसा हुआ भी तो वह मुहब्बत के किसी न किसी रंग में सराबोर होकर सामने आया और प्यार की नाज़ुकी और पाकीज़गी के एहसास के बीच ऐसा खो गया जैसे एक नए प्रयोग की काँकरी लहरों के कम्पन का हिस्सा बनकर नज़र की चुभन नहीं बनने पाती। बोलचाल में आमतौर पर प्रचलित अंग्रेज़ी शब्दों को उर्दू ग़ज़ल में लाने का बहुत बड़ा श्रेय डॉ. बशीर बद्र को दिया जाता है। अहतिशाम अख़्तर ने उनके बारे में लिखा है कि “बशीर बद्र का बड़ा कारनामा ये है कि उन्होंने अंग्रेज़ी के अल्फ़ाज़ को ग़ज़ल की ज़बान में समोने और ग़ज़ल के मिज़ाज से हमआहंग करने की कोशिश की है। ये बड़ा मुश्किल काम है। अंग्रेज़ी का लफ़्ज़ ग़ज़ल में अज़्मो अहतियात और खुशअसलूबी से न इस्तेमाल किया जाए तो ग़ज़ल का शेर हज़ल बन जाता है।”

डॉ. बशीर बद्र के ऐसे शब्द-प्रयोग ग़ज़ल को हज़ल तो नहीं बनने देते, ग़ज़ल के पूरे परिवेश में वे चाहे भारी भले पड़ जाएँ। कहीं-कहीं ये प्रयोग उन्होंने यथार्थ की ज़मीन को सही-सही पकड़ने के लिए किए हैं। उनका एक शेर है:

मैं इतना बदमुआश नहीं यानि खुल के बैठ
चुभने लगी है धूप तो स्वेटर उतार दे।

आधुनिक नायिका के हावभाव, आचार-व्यवहार और मनोवृत्ति को उसी के अनुरूप शब्दावली में पेश किया गया है, भले वह ग़ज़ल का प्रचलित मुहावरा न हो। इसे ही अहतिशाम अख़्तर ने बशीर बद्र का बड़ा कारनामा बताया है और जिसे उर्दू के मोतबर आलोचक और शायर शारिब रुदौलवी ने और आगे बढ़ाते हुए कहा है कि "उन्होंने उर्दू शायरी में ऐसे डिक्शन को जन्म दिया है जो उनका अपना है। उनके छोटे-छोटे लफ़्ज़ों के पीछे एक दुनिया आबाद है जिसकी दिलकशी देखने से ताल्लुक़ रखती है।"

डॉ. बशीर बद्र को आज मक़बूलियत का जो मयार हासिल है वह उन्हें बहुत आसानी से नहीं मिला। यह दर्जा आसानी से तो ख़ैर किसे हासिल होता है। मीर हों, ग़ालिब हों, फ़ैज़ हों, हर बड़े शायर को कड़ी आज़माइशों से गुज़रना पड़ा है। बशीर बद्र ने भी बड़ी सख़्तियाँ झेली हैं, बड़े सर्दो-गरम मौसम उन पर गुज़रे हैं। आज वे अज़ीम शान और धूम से ग़ज़ल की दुनिया के आला मुकाम पर हैं तो इसलिए कि वे जिन्दगी के पेचीदा तजुर्बों को सादगी और पुरकारी के साथ शेर में उतारते हैं। और इस कमाल के साथ उतारते हैं कि दूसरी ज़बानों में ग़ज़ल के लिए जो नयी मुहब्बत और इज्ज़त पैदा हुई है, उसके लिए बशीर बद्र साहब के इस कमाल को श्रेय दिया जाता है। अबुल फ़ैज़ सहर ने तो यहाँ तक कहा है कि "आलमी सतह पर बशीर बद्र से पहले किसी भी ग़ज़ल को यह मक़बूलियत नहीं मिली। मीरो-ग़ालिब के शेर भी मशहूर हैं लेकिन मैं पूरे एतमाद से कह सकता हूँ कि आलमी पैमाने पर बशीर बद्र की ग़ज़लों के अश्आर से ज़्यादा किसी के शेर मशहूर नहीं हैं। इसकी वजह यह है कि आज के इन्सान की नफ़्सियाती मिज़ाज़ की तर्जुमानी जिस आलमी उर्दू के ग़ज़लिया असलूब में की है वह इससे पहले मुमकिन भी नहीं थी। वो इस वक़्त दुनिया में ग़ज़ल के सबसे महबूब शायर हैं।"

मुमकिन है कि डॉ. बशीर बद्र के लिए ऐसी इन्तहाई तारीफ़ में कुछ ज़ाती झुकाव और जज़्बाती लगाव काम कर रहा हो लेकिन इसमें तो कोई शक़ है ही नहीं कि आलमी ऐतबार से दुनिया के किसी भी कोने में मुशायरा आयोजित हो, उसमें हिन्दुस्तान के शायरों में डॉ. बशीर बद्र को ज़रूर याद किया जाता है। 1999 में जब बशीर बद्र को उर्दू अदब की ख़िदमत के लिए पद्मश्री से अलंकृत किया गया तो दोस्त के नाते मैं बेहद खुश था। हिन्दी कविता के लिए मुझे भी उसी साल पद्मश्री दी गई थी। जब 'पद्मश्री' लेने का समय आया तो समारोह में जनाब बशीर बद्र के दर्शन नहीं हुए। पता चला, वे इस समय मिडिल ईस्ट के किसी मुल्क में मुशायरा पढ़ने गए हुए हैं।

जब मुम्बई के एक जलसे में मेरी अगली मुलाक़ात हुई तो मुझे देखते ही गले से लिपट गए यह कहते हुए कि अदबी दुनिया में कम से कम राष्ट्रपति द्वारा अलंकृत होने के लिए हम दोनों एक साथ याद किए जाएँगे। मैंने कहा: "प्यारे भाई, आप तो उस मुबारक़ मौक़े पर भी नदारद रहे। आख़िर क्यों?"

उनका जवाब मुख़्तसर मगर मानीख़ेज था: "क्या करता नन्दन भाई! बड़ी मुहब्बत से उन लोगों ने महीनों पहले मेरे आने का वादा ले लिया था। उनकी मुहब्बत को कैसे नकारता! सो राष्ट्रपति भवन नहीं जा सका। लेकिन पद्मश्री तो चलकर मेरे घर आ गई, वह मुहब्बत

कहाँ से आती!”

याद रखने की बात है कि डॉ. बशीर बद्र मुहब्बत के शायर माने जाते हैं।

•

वो मुहब्बत के शायर हैं और उनकी शायरी का एक-एक लफ़्ज़ इसका गवाह है। मुहब्बत का हर रंग उनकी ग़ज़लों में मौजूद है। दिखाई देने वाले रंगों में भी और न दिखाई देने वाले रंगों में भी। पक्के तौर पर उनका पैग़ाम—मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे। कुदरत का पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा, धूप का हर टुकड़ा, छाया की हर फाँक उनकी मुहब्बत की रंगतें बिखेरती है। उनकी इन रंगतों में आशिक़ी के बेपनाह खूबसूरत तसव्वुरात हैं खुशबू की तरह महकते हुए, तितलियों की तरह चहकते हुए, बादलों की तरह घिरे हुए, फ़सलों की तरह लहकते हुए, एक से एक बारीक बिम्ब, एक से एक बढ़कर तैरते हुए-से ख़्वाब...!

मैं घर से जब चला तो किवाड़ों की ओट में
नर्गिस के फूल चाँद की बाँहों में छुप गए।

इस शेर को पढ़िए तो लगता है, दाम्पत्य जीवन के किसी बिम्ब को यथार्थ की धरती से उठा कर उदात्तता की गोद में बैठा दिया गया है। डॉ. बशीर बद्र अपनी मुहब्बत के इज़हार में परम्परागत प्रतीकों का इस्तेमाल कम, जिन्दगी के अनुभवों, रूपकों और प्रतीकों का इस्तेमाल ज़्यादा करते हैं। लेकिन ये अनुभव, ये बिम्ब समझ में आने वाले बिम्ब होते हैं। दर्द को अन्दर-अन्दर पी जाने की क़ैफ़ियत बार-बार शायरों ने बयान की है। डॉ. बशीर बद्र दर्द को अन्दर-अन्दर पी जाने का जो मंज़र सामने लाते हैं वह उनकी अनोखी सृष्टि है:

अब के आँसू आँखों से दिल में उतरे
रुख बदला दरिया ने कैसा बहने का

अमूमन आँसू अन्दर से बाहर आँख में आता है, यहाँ आँख से उतर कर दिल की तरफ़ बह गया है। दिशा बदल गई बहने की।

मुहब्बत की रंगतें जीते हुए वे कभी-कभी उन रंगतों से खेलने भी लगते हैं:

बीच बाज़ार में गा रहा था कोई
आओ ना मेरी जाँ, चाँदनी चौक में

जो शायर लिखता है:

मुझे देर तक अपनी पलकों पै रख
यहाँ आते-आते ज़माने लगे

वह अपनी ‘जाँ’ को इस तरह चाँदनी चौक में आने के लिए भला आवाज़ देगा! लेकिन

डॉ. बशीर बद्र अपनी मुहब्बत में चुहलभरी शरारत तक करते नज़र आते हैं और फिर उसी क्षण को इबादत का दर्जा देते नज़र आते हैं:

लोबान में चिंगारी जैसे कोई रख जाए
यों याद तेरी शब भर सीने में सुलगती है

जैसे बशीर बद्र ने अपनी शायरी में चुहल से गुरेज़ नहीं किया, उसी तरह उनके हमसुख़न और समकालीन अदीबों ने भी उनके साथ चुहलबाज़ी की है। सभी जानते हैं कि डॉ. बशीर बद्र ने अपनी तनहाई को बहलाने के लिए न सिगरेट का सहारा लिया, न शराब का। वक़्तगुज़ारी के लिए दूसरे शायरों की बुराई करते भी उन्हें नहीं पाया जाता। तब फिर वक़्तगुज़ारी करते कैसे हैं? इस पर जनाब निदा फ़ाज़ली की टिप्पणी सुन लीजिए: “वे जहाँ भी मिलते हैं, अपने नए शेर सुनाते हैं। सुनाने से पहले यही कहते हैं कि भाई, नए शेर हैं, कोई भूल-चूक हो गई हो तो बता दो, इस्लाह कर दो। लेकिन सुनाने का अन्दाज़ ऐसा होता है जैसे कह रहे हों: क्यों झक मारते हो—ग़ज़ल कहना हो तो इस तरह कहा करो।”

इस तरह की चुटकियों में निदा ने उनके रूमानी अन्दाज़ पर भी दोस्ताना चिकोटी काटी है: “मिज़ाज से रूमानी हैं लेकिन उनके साथ अभी तक किसी इश्क़ की कहानी मंसूब नहीं हुई। जिस उम्र में इश्क़ के लिए शरीर ज्यादा जाग्रत होता है, वह शौहर बन कर घर-बार के हो जाते हैं। अब जो भी अच्छा लगता है, उसे बहन बना कर रिश्तों की तहज़ीब निभाते हैं।”

कभी-कभी उनका श्रोता भी उनसे चुहल कर लेता है। मुम्बई में जब मुझे परिवार-पुरस्कार दिया गया तो कोशिश यह की गई कि किसी बड़े कवि या शायर के हाथों यह पुरस्कार नन्दन जी को अर्पित किया जाए। इसके लिए डॉ. बशीर बद्र को चुना गया। जब उनसे अपना कलाम पेश करने की गुज़ारिश की गई तो एक श्रोता ने शुरू में ही फ़रमाइश कर दी कि “जिन्दगी तूने मुझे...”।

उन्होंने वही ग़ज़ल सुनाई, बेहद सराही गई। टूट के तालियाँ मिलीं। हासिले-ग़ज़ल शेर है:

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीं
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

एक श्रोता ने पीछे से आवाज़ लगाई: “अपने क़द की लम्बाई भी तो देखो मियाँ! माला पहनाने के लिए सीढ़ी लगाने की ज़रूरत पड़ती है, तब फिर पाँव फैलाने पर सर तो टकराएगा ही।” श्रोता की इस फ़ब्ती पर दुबारा बशीर बद्र साहब ने जम कर तालियाँ लूटीं। इसके बाद उन्होंने इश्क़ के रंग में डूबी अपनी मशहूर ग़ज़ल सुनाई:

यूँ ही बेसबब न फिरा करो,
कोई शाम घर भी रहा करो

असल में इश्क की बारीकियों के हज़ारहा मंज़र बशीर बद्र की शायरी में हैं:

कभी पा के तुझको खोना कभी खो के तुझको पाना
ये जनम जनम का रिश्ता तेरे मेरे दरमियाँ हैं
उन्हीं रास्तों ने जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे
मुझे रोक-रोक पूछा तेरा हमसफ़र कहाँ है

कहीं विसाल की तस्वीरें हैं, कहीं जुदाई के गिले-शिकवे हैं और इनके बीच कहीं न होने के समय भी होने का एहसास रोशनी बन कर उभरता है जिन्हें कहीं उन्होंने यादों के उजाले कहा है, कहीं जलती हुई कंदील। शेर देखें-

तमाम रात चराग़ों में मुस्कुराती थी
वो अब नहीं है मगर उसकी रोशनी हूँ मैं

रोशनी के लिए जलने की अनिवार्यता भी उनकी मुहब्बत की पहचान का एक रंग है-

मेरी छत से रात की सेज तक कोई आँसुओं की लक़ीर है
ज़रा बढ़ के चाँद से पूछना वो उसी तरफ़ से गया न हो
वो फ़िराक़ हो कि विसाल हो तेरी आग महकेगी एक दिन
वो गुलाब बन के खिलेगा क्या जो चराग़ बन के जला न हो

इश्क और वफ़ा के ऐसे ही अशआर के बीच वे जिन्दगी की सही तस्वीर भी दिखाते चलते हैं। और यह दिखाना जब रूपकों और प्रतीकों के ज़रिए सामने आता है तो और खूबसूरत हो जाता है-

यही अन्दाज़ है मेरा समन्दर फतह करने का
मेरी काग़ज़ की कश्ती में कई जुगनू भी होते हैं

ज़ाहिर है, तारीकियों के तलातुम में जुगनुओं से फतहयाबी हासिल नहीं हुआ करती लेकिन समन्दर जैसी अज़ीम हस्ती को जुगनू से नकारने का हौसला रखना फतहयाबी की दिशा में बढ़ाया हुआ कदम है।

सांसारिक संघर्षों में ज़िन्दगी के अनुभवों की तल्ख़ी को जब उनके शेर अपनी आँच देते हैं तो तस्वीर यों बनती हैं-

मेरी निगाह जिधर भी गई ख़िज़ाँ ही मिली
न जाने कितने बरस हो गए न देखी बहार

यहाँ बहार का न देखना मायूसी और हताशा का पर्याय नहीं है, एक कैफ़ियत भर है

क्योंकि ख़िजाँ से लड़ने का और बहार को वापस ले आने का हौसला नहीं टूटा। इस हौसले में यह विश्वास जुड़ा हुआ है कि एक दिन वह इबारत लिखूँगा ज़रूर, जिसे परिस्थितियों ने मिटा दिया है-

एक दिन तुझसे मिलने ज़रूर आऊँगा
जिन्दगी मुझको तेरा पता चाहिए

•

इस खोई हुई जिन्दगी की शुरुआत सैयद मोहम्मद बशीर (खुशख़बरी लानेवाला) नाम से हुई थी, बाद में उसमें उनका तख़ल्लुस ‘बद्र’ (पूर्णिमा का चाँद) जुड़ गया। शिक्षा उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में पाई जहाँ से उन्होंने एम.ए. भी किया और पी-एच. डी. भी। पढ़ने-लिखने में डॉ. बशीर बद्र इतने ज़हीन थे कि एम.ए. के पूर्वार्ध में सभी विषयों में प्रथम आने पर उन्हें सर विलियम मोरिस छात्रवृत्ति मिली। जब उर्दू में एम. ए. का नतीजा निकला तो उनका स्थान प्रथम श्रेणी में प्रथम था जिस पर उन्हें यूनिवर्सिटी का स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। जब और विवरण सामने आए तो पता चला कि वे विभिन्न विषयों में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले समस्त छात्रों में भी प्रथम आए हैं, तो उन्हें डॉ. राधाकृष्णन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अरबी का बशीर फ़ारसी के बद्र से जुड़कर उर्दू शायरी के लिए सचमुच पूर्णिमा के चाँद जैसी खुशख़बरी लेकर आया।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में रहते हुए उन्होंने 1969 में ही विश्वविद्यालय की मैगज़ीन का ग़ालिब नंबर निकाला जो इतना सराहा गया कि विश्वविद्यालय ने उसे किताब के रूप में भी शाया किया। उसी साल उनका पहला ग़ज़ल संग्रह ‘इकाई’ प्रकाशित हुआ जिस पर उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने पुरस्कार प्रदान किया। जब ग़ज़लों का दूसरा संग्रह ‘इमेज’ आया तो उसे भी उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी का पुरस्कार दिया गया। 1985 में उनका तीसरा संग्रह ‘आमद’ नाम से आया और उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने उसे भी पुरस्कृत किया। उसके अगले साल 1986 में ‘आमद’ पर उन्हें बिहार अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ। 1996 में उन्हें लखनऊ का ऑल इंडिया हिंदी-उर्दू साहित्य का पुरस्कार दिया गया और उसी साल मध्यप्रदेश की उर्दू अकादमी ने ऑल इंडिया मीर तक़ी मीर एवार्ड से सम्मानित किया। 1999 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया।

पुरस्कार प्राप्त करने के अलावा पुरस्कार देने वाले संगठनों और संस्थाओं के भी वे सदस्य रहे हैं जिनमें लखनऊ की उर्दू अकादमी की कार्यकारिणी की सदस्यता, साहित्य अकादमी, दिल्ली की सदस्यता, भारत सरकार के तरक़्क़िए उर्दू मंडल की कार्यकारिणी की सदस्यता, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ की रिसर्च डिग्री कमेटी की अध्यक्षता, हिमाचल प्रदेश अकादमी की पारितोषिक समिति की सदस्यता और कश्मीर विश्वविद्यालय के शिक्षा मंडल की सदस्यता मुख्य हैं।

कवि सम्मेलन और मुशायरों के सिलसिले में अमरीका, पाकिस्तान, कनाडा, दुबई, शारजा, अबू धाबी, बहरीन, मस्कत और दोहा (क़तर) की यात्राएँ कर चुके हैं और यह सफ़र-मुसाफ़िरी ज्यों का त्यों बरक़रार है।

इस सफ़र-मुसाफ़िरी का आधार उनकी शायरी की लोकप्रियता है। मुशायरों में अपने श्रोताओं से उनका ऐसा आत्मीय संवाद क़ायम होता है जिसे देखकर उनके मुशायरा पढ़ने की कला की तारीफ़ करनी पड़ती है। तरन्नुम और तहत दोनों में उनका शायरी का सम्प्रेषण उन्हें हरदिलअज़ीज़ बनाता है। लोकप्रियता की यह दौलत उन्हें मुशायरों से ही नहीं, संगीत और नृत्य की दुनिया से भी मिली है। अनेक ग़ज़ल गायकों ने उनकी ग़ज़लों को अपने स्वर और संगीत से सँवारा है, अनेक नृत्याँगनाओं के भावनृत्य उनकी ग़ज़लों का आधार लेकर मंच पर प्रस्तुत हुए हैं। कत्थक की मशहूर नृत्याँगना (स्व.) पुष्पा डोगरा को उनकी ग़ज़लों पर अपनी कला का प्रदर्शन करते अनेक बार देख चुका हूँ। अभी बहुत दिन नहीं हुए जब दिल्ली के प्रसिद्ध कमानी हाल में कत्थक की ही मशहूर कलाकार डॉ. नीलम वर्मा ने उनके कलाम पर नृत्य की अनेक परिकल्पनाएँ मंच पर उतारी थीं। ऐसी शामें विभिन्न कलाओं की आपसी एकात्मकता का नया मंज़र पेश करती हैं और उनकी शोहरत में इज़ाफ़ा भी करती हैं। ...और कभी-कभी उन्हें इस बात का भी एहसास कराती हैं कि:

शोहरत की बुलन्दी भी इक पल का तमाशा है
जिस शाख़ पे बैठे हो वह टूट भी सकती है

जैसा कि डॉ. गोपीचन्द नारंग ने कहा है, डॉ. बशीर बद्र को शोहरत आसानी से नहीं मिली और जो मिली उसकी उन्हें बड़ी मज़बूत कीमत चुकानी पड़ी। जिन दिनों वे मेरठ में अध्यापन कर रहे थे, उन्हीं दिनों साम्प्रदायिक दंगों के दौरान उनका घर जलाकर ख़ाक कर दिया गया। ख़बर जब मेरठ से बाहर फैली तो सारे देश के पढ़े-लिखे तबके में आक्रोश फैला। आक्रोश इसलिए भी कि उनकी लाइब्रेरी जल कर ख़ाक हो गई थी। ज्ञान का ख़ज़ाना ख़ाक किया गया था। जगह-जगह उनकी हिमायत में बैठकें हुईं। एक बैठक मेरठ में भी आयोजित की गई जिसमें शिरकत के लिए दिल्ली से लेफ्टि. जन. अरोड़ा और मुझे आमंत्रित किया गया। मंच पर वहाँ देखा तो डॉ बशीर बद्र भी मौजूद थे। उन्होंने तक़रीर करने के बजाय इस मौक़े पर लिखी गई ग़ज़ल पढ़ी और जले हुए मकान पर अफ़सोस करने के बजाय अपनी जली हुई लाइब्रेरी की किताबों और आग से बरबाद हुए लॉन का ज़िक्र किया:

मकाँ से क्या मुझे लेना मकाँ तुमको मुबारक हो
मगर ये घासवाला रेशमी कालीन मेरा है।

मुझे ताज्जुब हुआ जब मैंने पाया कि उनके दिल में उनके घर में आग लगाने वालों पर कोई आक्रोश नहीं था। अल्फ़ाज़ में एक दरवेशी समाँ तारी था:

अगर फुरसत मिले पानी की तहरीरों को पढ़ लेना
हर इक दरिया हज़ारों साल का अफ़साना कहता है।
तुम्हारे शहर के सारे दीये तो सो गए कब के

हवा से पूछना दहलीज़ पे ये कौन जलता है।

यह वही हवा थी जिसके लिए उन्होंने लिखा था कि हमारे और तुम्हारे बीच से ही हवा एक चिंगारी लेकर गई थी लेकिन इसका पता न हमें था न तुम्हें था कि वह चिंगारी थी कहाँ। हिन्दू-मुस्लिम दंगों के इस हादसे का यह नतीजा निकला कि डॉ. बशीर बद्र मेरठ छोड़ कर भोपाल जा बसे और अब भोपाल बशीर बद्र का वह 'घना जंगल' है जहाँ उन्हें सुकून मिलता है:

मुझे सुकून घने जंगलों में मिलता है
मैं रास्तों से नहीं मंज़िलों से डरता हूँ

'मंज़िलों से डरने वाला' यह नायाब शायर अब शायरी के उस मुकाम पर पहुँच गया है जहाँ से उसे मंज़िलों का पता पूछने और उनकी तरफ़ बढ़ने की जरूरत नहीं रह गई, मंज़िलें खुद-ब-खुद उसकी तरफ़ बढ़ती हुई आती हैं। अब उनमें यह कहने की ज़हनियत उभर चुकी है जहाँ पहुँचकर कोई शायर यह कहने लगता है:

हक़ीक़तों में ज़माने बहुत गुज़ार चुके
कोई कहानी सुनाओ बड़ा अँधेरा है

इसी अँधेरे का नतीजा है कि वे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की नई नस्लों के लिए यह कहना चाहते हैं कि:

इन नई नस्लों ने सूरज आज तक देखा नहीं
रात हिन्दुस्तान में है रात पाकिस्तान में

इस रात की तारीकी को मिटाने की जद्दोजहद भी अब उनकी शायरी में शामिल है और उसूल तो शामिल हैं ही जिनके तहत वे सारी दुनिया में मुहब्बतों के फूल खिलते हुए देखना चाहते हैं। उनकी इसी ख़्वाहिश को शब्द देते हुए उनके अशआर से उनके इस परिचय को विराम दे रहा हूँ:

मैं डर गया हूँ बहुत सायादार पेड़ों से
जरा सी धूप बिछाकर क़याम करता हूँ
मुझे खुदा ने ग़ज़ल का दयार बख़्शा है
ये सल्तनत मैं मुहब्बत के नाम करता हूँ

धूप के बिछौने पर क़याम करने वाले इस शायर की मुहब्बत के नाम लिखी शायरी की यह सल्तनत मैं अब पाठकों की नज़र कर रहा हूँ।

—कन्हैयालाल नन्दन

क्रम

उजाले अपनी यादों के
कई सितारों को मैं
दुश्मनी जम कर करो
लोग टूट जाते हैं
दुश्मनी का सफर इक
कोई हाथ भी न मिलायेगा
कुछ तो मजबूरियाँ
उतर भी जाओ कभी
अगर हम साहिलों पे
औराक़ में छुपाती थी
आख़िर ग़ज़ल का ताजमहल
गुज़ारे हमने कई साल
हमसफ़र ने मेरा साथ
गर्म कपड़ों का सन्दूक मत
ऐसा लगता है हर
अब यहाँ प्यासे परिंदे
प्यार पंछी, सोच पिंजरा,
मैं कब कहता हूँ
ख़त में बारिकियाँ चमकती हैं
शे’र मेरे कहाँ थे
सर पे साया सा
मुस्कुराती हुई धनक
आस होगी न
राहों में कौन आ गया
चरवाहा भेड़ों को लेकर

तेरी जन्नत से हिजरत
अपनी खोई हुई जन्नतें पा
सर दर्द जैसे नींद के
अब हुई दास्ताँ
फूल सा कुछ कलाम
वक़्ते-रुख़सत कहीं
कोई हाथ नहीं
जब तक निगाहे-रश्क
मैं ग़ज़ल कहूँ मैं ग़ज़ल पढ़ूँ
अदब की हद में
वो नहीं मिला तो मलाल क्या
ये ख़ला है अर्शे-बरी नहीं
मेरे साथ तुम भी दुआ करो
है अजीब शहर की जिन्दगी
कभी तो शाम ढले
कहीं पलकें ओस से धो गई
कई पेड़ धूप के पेड़ थे
मैं कब तनहा हुआ था
दिखला के यही मंज़र
मेरे दिल की राख
वो शाख़ है न फूल
अच्छी आँखे सच्चे दिल
आँसुओं में रची
चल-चल के रुके, रुक रुक
तितलियों का मुझे टूटा हुआ
अजनबी पेड़ों के साये में
मैं घना अँधेरा हूँ
बेसदा ग़ज़लें न लिख
मेरी ज़िन्दगी भी मेरी नहीं
पके गेहूँ की खुशबू
बड़ी आग है, बड़ी आँच है
दिल पे छाया रहा
सरे राह कुछ भी कहा नहीं
अब तेरे मेरे बीच
वही ताज़ है वही तख़्त है

कौन आया रास्ते
वो बुझे घरों का चराग़ था
माटी की कच्ची गागर
अच्छा तुम्हारे शहर का
आग लहरा के चली है
सर-सर हवा में सरके
यूँ ही बेसबब न फिरा करो
कोई फूल धूप की पत्तियों में
अभी इस तरफ न निगाह कर
कभी यूँ भी आ मेरी आँख में
सब कुछ ख़ाक हुआ है
कभी यूँ मिलें कोई मसहलत
आग को गुलज़ार कर दे
इबादतों की तरह
परखना मत
नाम उसी का नाम
आइना धूप का
मैं जमीं ता आसमां
दारू से इनकार करेगा
चाँदनी रात है
जागी हुई ग़ज़ल
रात आँखों में ढली
सर झुकाओगे तो
उदास चाँद सितारों को
ग़ज़ल को माँ की तरह
यार कह दे
सात रंगों के
दालानों की धूप
किताबें, रिसाले न
मेरे बारे में हवाओं
मुझको अपनी नज़र
किसी की याद में
खुशबू की तरह आया
तू मुझसे तेज़ चलेगा
जब सहर चुप हो

हमारा दिल सवेरे का
तारों भरी पलकों की
महफिलें मैकशाँ कूचए
कहीं चाँद राहों में खो गया
लहरों में डूबते रहे
रात से जी है
न जी भर के देखा
निकल आए इधर
आँसुओं से धुली खुशी
मुस्कुराते रहे गम छुपाते
दिल की दहलीज़ पे यादों
हमारे हाथों में एक
मौहब्बतों में दिखावे
खुदा हमको ऐसी खुदाई
किसे ख़बर थी तुझे
कोई जान न सका
हर रोज़ हमें मिलना
खुश रहे या बहुत
किसने मुझको सदा
हर बात में महके
पत्थर के जिगर वालो
दूसरों को हमारी
इस तरह दुनिया मिली
होंठों पे मुहब्बत के
सँवार नोक पलक
कोई लश्कर है कि
उदास आँखों से आँसू
आँखों में रहा दिल
चमक रही है परों में
हँसी मासूम सी
अँधेरे रास्तों में यूँ
आँधियों के साथ क्या
उनको आईना बनाया
सर पे साया सा
इक शहर था ख़राब

बड़े ताजिरों की सताई
दुआ करो कि ये पौधा
सौ खुलूस बातों में
वो महकती पलकों की
सोये कहाँ थे आँखों ने
आँसुओं के साथ सब कुछ
कहाँ आँसुओं की ये सौगात
राहों में कौन आया
सूरज चंदा जैसी जोड़ी हम दोनों
उसकी आँखों सा उसके गेसू सा

जो कहूँगा सच कहूँगा,
यही फैसला किया है
जो लिखूँगा सच लिखूँगा,
यही फैसला किया है

—बशीर बद्र

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो,
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए।

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंज़िल पे नज़र है,
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।

उन्हीं रास्तों ने, जिन पर कभी तुम थे साथ मेरे,
मुझे रोक-रोक पूछा, तेरा हमसफ़र कहाँ है

देने वाले ने दिया सब कुछ अजब अन्दाज़ से,
सामने दुनिया पड़ी है, और उठा सकते नहीं।

चाँद चेहरा, जुल्फ़ दरिया, बात खुशबू, दिल चमन,
इक तुझे देकर खुदा ने, दे दिया क्या-क्या मुझे।

हमसे मजबूर का गुस्सा भी अजब बादल है।
अपने ही दिल से उठे अपने ही दिल पर बरसे।

कई सितारों को मैं जानता हूँ बचपन से,
कहीं भी जाऊँ मेरे साथ-साथ चलते हैं।

दुनिया में कहीं इनकी तालीम[1] नहीं होती,
दो चार किताबों को घर में पढ़ा जाता है।

उसके लिए तो मैंने यहाँ तक दुआएँ कीं,
मेरी तरह से कोई उसे चाहता भी हो।

फिर उसके बाद अभी तक मुझे ज़मीं न मिली,
ज़रा सी उम्र थी तब तन्हा पहली बार उड़ा।

इतनी मिलती है मेरी ग़ज़लों से सूरत तेरी,
लोग तुझको मेरा महबूब समझते होंगे।

वो ज़ाफ़रानी पुलोवर उसी का हिस्सा है,
कोई जो दूसरा पहने तो दूसरा ही लगे।

---

1. शिक्षा

दुश्मनी जम कर करो लेकिन ये गुँजाइश रहे,
जब कभी हम दोस्त हो जायें तो शर्मिंदा न हों।

जिस तरह वापस कोई ले जाए अपनी चिट्ठियाँ,
जाने वाला इस तरह से कर पाया तन्हाँ मुझे।

दिल वो दरवेश है जो हाथ उठाता ही नहीं,
इसकी दहलीज़ पे सौ अहले-करम[1] आते हैं।

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीं,
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है।

परखना मत, परखने में कोई अपना नहीं रहता,
किसी भी आइने में देर तक चेहरा नहीं रहता।

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फ़ासला रखना,
जहाँ दरिया समंदर से मिला, दरिया नहीं रहता।

1. कृपा करने वाले, दयालु

लोग टूट जाते हैं एक घर बनाने में,
तुम तरस नहीं खाते बस्तियाँ जलाने में।

खुदा की इतनी बड़ी कायनात[1] में मैंने,
बस एक शख़्स को माँगा, मुझे वही न मिला।

शोहरत की बुलंदी भी पल भर का तमाशा है,
जिस डाल पे बैठे हो वो टूट भी सकती है।

मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियाँ बढ़ीं,
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं।

मुसाफ़िर हैं हम भी, मुसाफ़िर हो तुम भी,
किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी।

पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी,
आँखों को अभी ख़्वाब छुपाने नहीं आते।

---

1. संसार

दुश्मनी का सफ़र इक क़दम दो क़दम,
तुम भी थक जाओगे हम भी थक जायेंगे।

रात तेरी यादों ने दिल को इस तरह छेड़ा,
जैसे कोई चुटकी ले नर्म-नर्म गालों में।

सुना के कोई कहानी हमें सुलाती थी,
दुआओं जैसी बड़े पानदान की ख़ुशबू।

साहिल पे रुक गए थे जरा देर के लिए,
आँखों से दिल में कितने समंदर उतर गए।

शाम के बाद कचहरी का थका सन्नाटा,
बेगुनाही को अदालत के हुनर याद आये।

मैं आग था फूलों में तब्दील हुआ कैसे,
बच्चों की तरह किसने चूमा मेरे गालों को।

कोई हाथ भी न मिलायेगा, जो गले मिलोगे तपाक से,
ये नये मिज़ाज का शहर है, ज़रा फ़ासले से मिला करो।

मेरे दिल की राख कुरेद मत, इस मुस्कराके हवा न दे,
ये चराग़ फिर भी चराग़ है, कहीं तेरा हाथ जला न दे।

ये मुहब्बतों की कहानियाँ भी बड़ी अजीबो-गरीब हैं
तुझे मेरा प्यार नहीं मिला, मुझे उसका प्यार नहीं मिला।

वो महकती पलकों की ओट से, कोई तारा चमका था रात में,
मेरी बंद मुट्ठी न खोलिए, का निज़ाम दे मेरे हाथ में।

मेरे साथ तुम भी दुआ करो यूँ किसी के हक़ में बुरा न हो,
कहीं और हो न ये हादसा कोई रास्ते में जुदा न हो।

कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी,
यूँ कोई बेवफ़ा नहीं होता।

तुम मेरी ज़िन्दगी हो, ये सच है,
ज़िन्दगी का मगर भरोसा क्या।

जी बहुत चाहता है सच बोलें,
क्या करें हौसला नहीं होता।

वो चाँदनी का बदन खुशबुओं का साया है,
बहुत अज़ीज़ हमें है मगर पराया है।

तुम अभी शहर में क्या नए आए हो,
रुक गए राह में हादसा देख कर।

वो इत्रदान सा लहज़ा मेरे बुजुर्गों का,
रची बसी हुई उर्दू ज़बान की ख़ुशबू।

उतर भी आओ कभी आसमाँ के ज़ीनों से,
तुम्हें खुदा ने हमारे लिए बनाया है।

उसे किसी की मुहब्बत का एतबार नहीं,
उसे ज़माने ने शायद बहुत सताया है।

मेरी सुबह तेरे सलाम से, मेरी शाम तेरी ही नाम से,
तेरे दर को छोड़ के जाऊँगा, ये ख़याल दिल से निकाल दे।

सरे-राह कुछ भी कहा नहीं, कभी उसके घर मैं गया नहीं,
मैं जनम-जनम से उसी का हूँ, उसे आज तक ये पता नहीं।

ये खुदा की देन अजीब है, किसी इसी का नाम नसीब है,
जिसे तूने चाहा वो मिल गया, जिसे मैंने चाहा मिला नहीं।

अगर हम साहिलों पे डोर-काँटे ले के बैठेंगे,
तो मौजों में चमकती तितलियों को कौन देखेगा।

सब्ज पत्ते धूप की ये आग जब पी जायेंगे,
उजले फर के कोट पहने हलके जाड़े आयेंगे

हँसी मासूम सी, बच्चों की कॉपी में इबारत सी,
हिरन की पीठ पर बैठे परिंदे की शरारत सी।

वो जैसे सर्दियों में गर्म कपड़े दे फकीरों को,
लबों पे मुस्कुराहट थी, मगर कैसी हिकारत[1] सी।

मेरे होंठों, मेरी आँखों पे ये कैसी तमाज़त[2] है,
कबूतर के परों की रेशमी उजली हरारत सी।

तमाम रिश्तों को मैं घर पे छोड़ आया था,
फिर उसके बाद मुझे कोई अजनबी न मिला।

---

1. घृणा, 2. गर्मी

औराक़[1] में छुपाती थी अक्सर वो तितलियाँ,
शायद किसी हिसाब में रक्खा हुआ हूँ मैं।

जैसे कि सारे शहर की बिजली चली गयी,
आँखें खुली-खुली थीं, मगर सूझता न था।

थके-थके पैडल के बीच चले सूरज,
घर की तरफ़ लौटी दफ़्तर की शाम।

शाम तक कितने हाथों से गुज़रूँगा मैं,
चायखाने में उर्दू के अख़बार सा।

जिसकी मुख़ालफ़त हुई मशहूर हो गया,
इन पत्थरों से कोई परिंदा गिरा नहीं।

ये रात फिर न आएगी बादल बरसने दे,
मैं जानता हूँ सुबह तुझे भूल जाऊँगा।

---

1. किताब के पन्ने, 2 विरोध

आख़िर ग़ज़ल का ताजमहल भी है मक़बरा,
हम ज़िन्दगी थे हमको किसी ने जिया नहीं।

आवाज़ फड़फड़ा के वहीं दफ़्न हो गयी,
सीने में ग़ालिबन कोई बिजली का तार है।

खुदा का शुक्र अभी तक है अपने जिस्मों में,
वो एक फ़र्क जो होता है मादा और नर में।

दिल में उसी तरह है बचपन की एक याद,
शायद अभी कली को हवा ने छुआ नहीं।

मैं घर से जब चला तो किवाड़ों की ओट में,
नर्गिस के फूल चाँद की बाहों में छुप गए।

उनसे कहना कि मैं पैदल नहीं आने वाला,
कोई बादल मुझे कांधे पे बिठा के ले जाये।

गुज़ारे हमने कई साल ऐसे दफ़्तर में,
कुँआरी लड़की रहे जैसे ग़ैर के घर में।

मेरे सीने में कोई साँस चुभा करती है,
जैसे मज़दूर को परदेस में घर याद आये।

हमारे हाथों में इक शक्ल चाँद जैसी थी,
तुम्हें ये कैसे बताएँ वो रात कैसी थी।

तीन समंदर, दो सहरा उसके आगे,
नागिन जैसी एक लकीर चमकती है

दुनिया के सारे शहरों का कल्चर यक्साँ,
आबादी, तन्हाई बनती जाती है।

सीने से लगके काटता रहता है रात-दिन,
दरिया का नर्म मिट्टी से क्या इख़्तलाफ़[1] है।

1. विरोध

हमसफ़र ने मेरा साथ छोड़ा नहीं,
अपने आँसू दिए रास्ते के लिए।

मैं तुझे भूल जाऊँगा इक दिन,
वक़्त सब कुछ बदल चुका होगा।

मेरे हाथों की इन लकीरों में,
मेरी महरूमियाँ[1] चमकती हैं।

मैं कब कहता हूँ वो अच्छा बहुत है,
मगर उसने मुझे चाहा बहुत है।

उसे शुहरत ने तन्हा कर दिया है,
समंदर है मगर प्यासा बहुत है।

वो खुद हारे हुए हैं ज़िन्दगी से,
जो दुनिया पर हुकूमत कर रहे हैं।

---

1. विफलताएँ

गर्म कपड़ों का संदूक मत खोलना, वर्ना यादों की काफ़ूर जैसी महक,
ख़ून में आग बनकर उतर जायेगी, सुब्ह तक ये मकां खाक हो जाएगा।

धुँल की बंद पलकें कुतरते हुए, सायकल पर चलें धूप की कैचियाँ,
रंग वाली हवाओं के कुर्ते उड़े सुब्ह का सायरन दे रहा सदा।

लान में एक भी बेल ऐसी नहीं जो देहाती परिन्दे के पर बाँध ले,
जंगली आम की जान-लेवा महक, जब बुलाएगी वापस चला जाएगा।

रेशमी बालों वाले किसी फूल की गर्म टोपी फँसी झाड़ियों में मिली,
सुर्ख खरगोश के वो तअक़्कुब[1] में गुम वादियों में उतरता चला गया।

चाहे कोई मौसम हो, दिन गई बहारों के फिर से लौट आयेंगे,
एक फूल की पत्ती, अपने होंठ पर रखकर मेरे होंठ पर रख दो।

बर्फ़ सी उजली पोशाक पहने हुए पेड़, जैसे दुआओं में मसरूफ़[2] हों,
वादियाँ पाक मरियम का आँचल हुईं, आओ सज्दा करें, सर झुकायें कहीं।

---

1. पीछा करना 2. व्यस्त

ऐसा लगता है हर इम्तिहाँ के लिए,
ज़िन्दगी को हमारा पता याद है।

हक़ीक़त सुर्ख मछली जानती है,
समंदर कैसा बूढ़ा देवता है।

बात क्या है कि मशहूर लोगों के घर,
मौत का सोग होता है त्यौहार सा।

वो अनपढ़ था फिर भी उसने पढ़े-लिखे लोगों से कहा,
इक तस्वीर कई ख़त भी हैं, साहब आपकी रद्दी में।

हम क्या जानें दीवारों से कैसे धूप उतरती होगी,
रात रहे बाहर जाना है, रात गये घर आना बाबा।

अब यहाँ प्यासे परिंदे आएँगे किसके लिए,
झील को सूखे हुए कितने ज़माने हो गए।

पसीना बंद कमरे की उमस का जज़्ब[1] है इसमें,
हमारे तौलिये में धूप की खुशबू कहाँ होगी।

आसमाँ के साथ हमको ये जमीं भी चाहिए,
भोर बिटिया, साँझ माता दोनों अपने साथ हैं।

वो जवानी चार दिन की चाँदनी थी अब कहाँ,
आज बचपन और बुढ़ापा दोनों अपने साथ हैं।

हम कहीं जाते नहीं, अहबाब[2] भी आते नहीं,
इन दिनों आ जाइये, फुर्सत ही फुर्सत है बहुत।

सात संदूकों में भरके दफ़्न कर दो नफ़रतें,
आज दुनिया को मुहब्बत की ज़रूरत है बहुत।

---

1. शोषण, सोखना, 2. दोस्त

प्यार पंछी, सोच पिंजरा, दोनों अपने साथ हैं,
एक सच्चा, एक झूठा, दोनों अपने साथ हैं,

आसमाँ के साथ हमको ये ज़मीं भी चाहिये,
भोर बिटिया, साँझ माता, दोनों अपने साथ हैं।

आग की दस्तार[1] बाँधी, फूल की बारिश हुई,
धूप पर्वत, शाम झरना, दोनों अपने साथ हैं।

ये बदन की दुनियादारी और मेरा दरवेश दिल,
झूठ माटी, साँच सोना, दोनों अपने साथ हैं।

वो जवानी चार दिन की चाँदनी थी अब कहाँ,
आज बचपन और बुढ़ापा, दोनों अपने साथ हैं।

मेरा और सूरज का रिश्ता बाप बेटे का सफ़र,
चंदा मामा, गंगा मैया, दोनों अपने साथ हैं।

जो मिला वो खो गया, जो खो गया वो मिल गया,
आने वाला, जाने वाला, दोनों अपने साथ हैं।

---

1. पगड़ी

मैं कब कहता हूँ वो अच्छा बहुत है,
मगर उसने मुझे चाहा बहुत है।

ख़ुदा इस शह्र को महफ़ूज़ रक्खे,
ये बच्चों की तरह हँसता बहुत है।

मैं तुझसे रोज़ मिलना चाहता हूँ,
मगर इस राह में ख़तरा बहुत है।

मेरा दिल बारिशों में फूल जैसा,
ये बच्चा रात में रोता बहुत है

इसे आँसू का इक क़तरा न समझो,
कुआँ है और ये गहरा बहुत है।

उसे शुहरत ने तन्हा कर दिया है,
समंदर है मगर प्यासा बहुत है।

मैं इक लम्हे में सदियाँ देखता हूँ,
तुम्हारे साथ इक लम्हा बहुत है।

मेरा हँसना ज़रूरी हो गया है,
यहाँ हर शख़्स संजीदा बहुत है।

ख़त में बारीकियाँ चमकती हैं,
फूल सी उँगलियाँ चमकती हैं।

चाँद सो कर उठा है कमरे में,
दूर से खिड़कियाँ चमकती हैं।

घर में इक रोशनी सी होती है,
काँच की चूड़ियाँ चमकती हैं।

इक गुलाबी-गुलाबी काग़ज़ पर,
आज भी तितलियाँ चमकती हैं।

मेरे हाथों की इन लकीरों में,
मेरी महरूमियाँ चमकती हैं।

शे’र मेरे कहाँ थे किसी के लिए,
मैंने सब कुछ लिखा है तुम्हारे लिए।

अपने दुख-सुख बहुत ख़ूबसूरत रहे,
हम जिये भी तो इक-दूसरे के लिए।

हमसफ़र ने मेरा साथ छोड़ा नहीं,
अपने आँसू दिये रास्ते के लिए।

हम हवेली में अब कोई रहता नहीं,
चाँद निकला किसे देखने के लिए।

ज़िन्दगी और मैं दो अलग तो नहीं,
मैंने सब फूल-काँटे इसी से लिए।

शहर में अब मेरा कोई दुश्मन नहीं,
सबको अपना लिया मैंने तेरे लिए।

ज़हन में तितलियाँ उड़ रहीं हैं बहुत,
कोई धागा नहीं बाँधने के लिए।

एक तस्वीर ग़ज़लों में ऐसी बनी,
अगले-पिछले ज़मानों के चेहरे लिए।

सर पे साया सा दस्ते-दुआ[1] याद है,
अपने आँगन में इक पेड़ था याद है।

जिसमें अपनी परिंदों से तसबीह थी,
तुमको स्कूल की वो दुआ याद है?

ऐसा लगता है हर इम्तिहाँ के लिए,
ज़िन्दगी को हमारा पता याद है।

मयकदे में अज़ाँ सुनके रोया बहुत,
उस शराबी को दिल से ख़ुदा याद है।

मैं पुरानी हवेली का पर्दा, मुझे-
कुछ कहा याद है, कुछ सुना याद है।

---

1. प्रार्थना का हाथ

मुस्कुराती हुई धनक है वही,
उस बदन में चमक-दमक है वही।

फूल कुम्हला गये उजालों के,
साँवली शाम में नमक है वही।

अब भी चहरा चराग़ लगता है,
बुझ गया है मगर चमक है वही।

वो सरापा[1] दिये की लौ जैसे,
मैं हवा हूँ उधर लपक है वही।

कोई शीशा ज़रूर टूटा है,
गुनगुनाती हुई खनक है वही।

प्यार किसका मिला है मिट्टी में,
इस चमेली तले महक है वही।

---

1. सिर से पैर तक

आस होगी न आसरा होगा,
आने वाले दिनों में क्या होगा।

मैं तुझे भूल जाऊँगा इक दिन,
वक़्त सब कुछ बदल चुका होगा।

नाम हमने लिखा था आँखों में,
आँसुओं ने मिटा दिया होगा।

कितना दुश्वार था सफ़र उसका,
वो सरे-शाम सो गया होगा।

पतझड़ों की कहानियाँ पढ़ना,
सारा मंज़र किताब सा होगा।

आसमाँ भर गया परिंदों से,
पेड़ कोई हरा गिरा होगा।

राहों में कौन आ गया कुछ पता नहीं,
उसको तलाश करते रहे जो मिला नहीं।

बेआस खिड़कियाँ हैं, सितारे उदास हैं,
आँखों में आज नींद का कोसों पता नहीं।

मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियाँ बढ़ीं,
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं।

दिल में उसी तरह है बचपन की एक याद,
शायद अभी कली को हवा ने छुआ नहीं।

चेहरे पे आँसुओं ने लिखी हैं कहानियाँ,
आईना देखने का मुझे हौसला नहीं।

चरवाहा भेड़ों को लेकर घर-घर आया, रात हुई,
तू पंछी, दिल तेरा पिंजरा, पिंजरे में जा रात हुई।

कोई हमें हाथों में उठाकर बिस्तर पे रख देता है,
दुनिया वाले ये कहते हैं—सूरज डूबा रात हुई।

शहर, मकाँ, दूकानों वाले सब पर्दे किरनों ने लपेटे,
ख़त्म हुआ सब खेल-तमाशा, जा अब घर जा रात हुई।

सुर्ख़ सुनहरा साफ़ा बाँधे शहज़ादा घोड़े से उतरा,
काले ग़ार का कम्बल ओढ़े जोगी निकला रात हुई।

किसकी ख़ातिर धूप के गजरे इन शाख़ों ने पहने थे,
जंगल-जंगल रोये मीरा, कोई न आया रात हुई।

तेरी जन्नत से हिजरत[1] कर रहे हैं,
फ़रिश्ते क्या बग़ावत कर रहे हैं।

हम अपने जुर्म का इक़रार कर लें,
बहुत दिन से ये हिम्मत कर रहे हैं।

वो खुद हारे हुए हैं ज़िन्दगी से,
जो दुनिया पर हुकूमत कर रहे हैं।

ज़मीं भीगी हुई है आँसुओं से,
यहाँ बादल इबादत कर रहे हैं।

फ़ज़ा में आयतें[2] महकी हुई हैं,
कहीं बच्चे तिलावत[3] कर रहे हैं।

परिंदों के ज़मीनो-आसमाँ क्या,
वतन में रहके हिज़रत कर रहे हैं।

ग़ज़ल की आग में पलकों के साये,
मुहब्बत की हिफ़ाज़त कर रहे हैं।

हमारी बेबसी की इंतहा है,
कि ज़ालिम की हिमायत कर रहे हैं।

---

1. अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जाना 2. कुरान के वाक्य, 3. कुरान का पाठ

अपनी खोई हुई जन्नतें पा गये, ज़ीस्त के रास्ते भूलते-भूलते,
मौत की वादियों में कहीं खो गए, तेरी आवाज़ को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते।

मस्त-सरशार[1] थे, कोई ठोकर लगी, आसमाँ से ज़मीं पे यूँ हम आ गये,
शाख़ से फूल जैसे कोई गिर पड़े, रक़्स आवाज़ पे झूमते-झूमते।

कोई पत्थर नहीं हूँ कि जिस शक्ल में, मुझको चाहो बनाया बिगाड़ा करो,
भूल जाने की कोशिश तो की थी मगर, याद तुम आ गए भूलते-भूलते

आँखें आँसू भरी, पलकें बोझल घनीं, जैसे झीलें भी हों नर्म साये भी हों,
वो तो कहिए उन्हें कुछ हँसी आ गयी, बच गए आज हम डूबते-डूबते।

अब वो गेसू नहीं हैं जो साया करें, अब वो शाने[2] नहीं जो सहारा बनें,
मौत के बाजुओ! तुम ही आगे बढ़ो, थक गए आज हम घूमते-घूमते।

दिल में जो तीर हैं, अपने ही तीर हैं, अपनी ज़ंजीर से पाबा ज़ंजीर हैं,
संगरेज़ों[3] को हमने खुदा कर दिया, आख़रिश रात-दिन पूजते-पूजते।

---

1. नशे में चूर, उन्मत्त, 2. कंधे, 3. पत्थर

सर दर्द जैसे नींद के सीने पे’ सो गया,
उन फूल जैसे हाथों ने माथा जुँ ही छुआ।

इक लड़की एक लड़के के काँधे पे’ सोई थी,
मैं उजली-धुँधली यादों के कोहरे में खो गया।

सन्नाटे आये दर्ज़ों में झाँका, चले गए,
गर्मी की छुट्टियाँ थीं वहाँ कोई भी न था।

टहनी गुलाब की मेरी सीने से लग गई,
झटके के साथ कार का रुकना ग़ज़ब हुआ।

अब हुई दास्ताँ रक़म[1] बाबा,
उँगलियाँ हो गईं क़लम बाबा।

काग़ज़ी जूएशीर[2] लाये हैं,
अपना तेशा[3] यही क़लम बाबा।

चाँद अक्सर उदास रहता है,
उसको है किसका ग़म बाबा।

आहटें चिलमनों से पूछती हैं,
क़ैद कब तक रहेंगे हम बाबा।

इश्क ने ये भी रुतबा हम को दिया,
लोग कहते हैं मोहतरम[4] बाबा।

अब तो तन्हाइयाँ भी पूछती हैं,
है तेरा भी कोई सनम बाबा।

---

1. लिखा हुआ, 2. दूध की नदी, 3. कुदाल, 4. पूज्य

फूल सा कुछ कलाम और सही,
इक ग़ज़ल उसके नाम और सही।

उसकी ज़ुल्फ़ें बहुत घनेरी हैं,
एक शब का क़याम[1] और सही।

ज़िन्दगी के उदास क़िस्से हैं,
एक लड़की का नाम और सही।

कुर्सियों को सुनाइए ग़ज़लें,
क़त्ल की एक शाम और सही।

कपकपाती है शाम सीने में,
ज़हर का एक जाम और सही।

---

1. ठिकाना

वक़्ते-रुख़्सत कहीं तारे कहीं जुगनू आये,
हार पहनाने मुझे फूल से बाज़ू आये।

बस गयी है मेरे एहसास में ये कैसी महक,
कोई ख़ुशबू मैं लगाऊँ तेरी ख़ुशबू आये।

मैंने दिन-रात ख़ुदा से ये दुआ माँगी थी,
कोई आहट न हो दर पे' मेरे और तू आये।

उसकी बातों के गुलो-लाला[1] पे' शबनम बरसे,
सबको अपनाने का उस शोख़ को जादू आये।

उसने छू कर मुझे पत्थर से फिर इन्सान किया,
मुद्दतों बाद मेरी आँखों में आँसू आये।

इन दिनों आपका आलम भी अजब आलम है,
शोख़ आया हुआ जैसे कोई आहू[2] आये।

1. लाल फूल, 2. हिरन

कोई हाथ नहीं खाली है,
बाबा ये कैसी नगरी है।

कोई किसी का दर्द न जाने,
सबको अपनी-अपनी पड़ी है।

उसका भी कुछ हक़ है आख़िर,
उसने मुझसे नफ़रत की है।

फूल दुआ जैसे महके हैं,
किस बीमार की सुबह हुई है।

जैसे सदियाँ बीत चुकी हों,
फिर भी आधी रात अभी है।

कैसे कटेगी तन्हा-तन्हा,
इतनी सारी उम्र पड़ी है।

हम दोनों की ख़ूब निभेगी,
मैं भी दुखी हूँ वो भी दुखी है।

अब ग़म से क्या नाता तोड़ें,
ज़ालिम बचपन का साथी है।

दिल की ख़ामोशी पे’ न जाना,
राख के नीचे आग दबी है।

जब तक निगाहे-रश्क[1] का सीना दुखा न था,
सहरा में कोई लालए-सहरा[2] खिला न था।

दो-झील उसकी आँखों में लहरा के सो गयीं,
उस वक़्त मेरी उम्र का दरिया चढ़ा न था।

जागी न थीं नसों में तमन्ना की नागिनें,
इस गंदमी शराब को जब तक चखा न था।

इक बेवफ़ा के सामने आँसू बहाते हम?
इतना हमारी आँख का पानी मरा न था।

दो काले होंठ जाम समझकर चढ़ा गये,
वो आब जिससे मैंने वज़ू[3] तक किया न था।

वो काली आँखें शहर में मशहूर थीं बहुत,
तब उनपे मोटे शीशों का चश्मा चढ़ा न था।

मैं साहिबे-ग़ज़ल था हसीनों की बज़्म[4] में,
सर पे घनेरे बाल थे, माथा खुला न था।

1. ईर्ष्या की दृष्टि, 2. जंगल में एक लाल फूल, 3. नमाज़ पढ़ने से पहले हाथ-मुँह धोना, 4. सभा

मैं ग़ज़ल कहूँ मैं ग़ज़ल पढ़ूँ मुझे दे तो हुस्ने ख़याल दे
तेरा ग़म ही है मेरी तरबिअत[1], मुझे दे तो रंजो मलाल दे

सभी चार दिन की हैं चाँदनी, ये इमारतें, ये विज़ारतें[2]
मुझे उस फ़क़ीर की शान दे कि ज़माना जिसकी मिसाल दे

मेरी सुब्ह तेरे सलाम से मेरी शाम है तेरे नाम से
तेरे दर को छोड़ के जाऊँगा, ये ख़्याल दिल से निकाल दे

मेरे सामने जो पहाड़ थे सभी सर झुका के चले गए
जिसे चाहे तू ये उरूज[3] दे जिसे चाहे तू ये ज़वाल[4] दे

बड़े शौक़ से इन्हीं पत्थरों को शिकम[5] से बाँध के सो रहूँ
मुझे माले मुफ़्त हराम है मुझे दे तो रिज़्के-हलाल[6] दे

---

1. शिक्षा-दीक्षा, 2. मंत्रिमंडल, 3. ऊँचाई, 4. गिरावट, 5. पेट 6. मेहनत की रोज़ी

अदब की हद में हूँ मैं बे अदब नहीं होता
तुम्हारा तज़किरा[1] अब रोज़ो शब[2] नहीं होता

कभी-कभी तो छलक पड़ती हैं यूँ ही आँखें
उदास होने का कोई सबब नहीं होता

कई अमीरों की महरूमियाँ न पूछ के बस
ग़रीब होने का अहसास अब नहीं होता

वहाँ के लोग बड़े दिल फरेब होते हैं
मेरा बहकना भी कोई अजब नहीं होता

मैं उस ज़मीन का दीदार करना चाहता हूँ
जहाँ कभी भी ख़ुदा का ग़ज़ब नहीं होता

---

1. चर्चा, 2. दिन रात

वो नहीं मिला तो मलाल क्या, जो गुज़र गया सो गुज़र गया
उसे याद कर के न दिल दुखा जो गुज़र गया सो गुज़र गया

न गिला किया, न ख़फ़ा हुए, यूँ ही रास्ते में जुदा हुए
न तू बे वफ़ा, न मैं बे वफ़ा जो गुज़र गया सो गुज़र गया

वो ग़ज़ल की कोई किताब था, वो गुलों में एक गुलाब था
ज़रा देर का कोई ख़ुआब था, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

मुझे पतझड़ों की कहानियाँ न सुना सुना के उदास कर
तू ख़िज़ाँ का फूल है मुस्कुरा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

वो उदास धूप समेट कर कहीं वादियों में उतर चुका
उसे अब न दे मेरे दिल सदा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

ये सफ़र भी कितना तवील[1] है, यहाँ वक़्त कितना क़लील[2] है
कहाँ लौट कर कोई आएगा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

वो वफ़ायें थीं के जफ़ायें थीं, न ये सोच किसकी ख़तायें थीं
वो तेरा है उसको गले लगा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

कोई फ़र्क शाहो गदा[3] नहीं कि यहाँ किसी को बक़ा[4] नहीं
ये उजाड़ महलों की सुन सदा, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

तुझे ऐतबारो यक़ीं नहीं, नहीं दुनिया इतनी बुरी नहीं
न मलाल कर मेरे साथ आ, जो गुज़र गया सो गुज़र गया

---

1. लम्बा, 2. संक्षिप्त, छोटा 3. फ़कीर 4. अमरत्व

ये ख़ला[1] है अर्शेबरी[2] नहीं, कहाँ पाँव रक्खूँ ज़मीं नहीं
तेरे दर पे सजदे का शौक़ है, जो यहाँ नहीं तो कहीं नहीं

किसी बुततराश ने शहर में मुझे आज कितना बदल दिया
मेरा चेहरा मेरा नहीं रहा, ये ज़बीं[3] भी मेरी ज़बीं नहीं

है ज़रूर उसमें भी मसलहत[4], वो जो हँस के पूछे है ख़ैरियत
कि मुहब्बतों में ग़रज़ न हो, नहीं ऐसा प्यार कहीं नहीं

वहीं दर्दो-ग़म का गुलाब है, जहाँ कोई ख़ानाख़राब है
जिसे झुक के चाँद न चूम ले, वो मुहब्बतों की ज़मीं नहीं

तेरी ज़ुल्फ़ ज़ुल्फ़ सजाऊँ क्या, तुझे ख़्वाब ख़्वाब दिखाऊँ क्या
मैं सफ़र से लौट के आऊँगा, मुझे ख़ुद भी इसका यक़ीं नहीं

---

1. आकाश, 2. ऊँचा आसमान, 3. माथा, 4. नीति

मेरे साथ तुम भी दुआ करो यूँ किसी के हक में बुरा न हो
कहीं और हो न ये हादसा कोई रास्ते में जुदा न हो

सरे शाम ठहरी हुई ज़मीं जहाँ आसमाँ है झुका हुआ
इसी मोड़ पर मेरे वास्ते वो चराग़ ले के खड़ा न हो

मेरी छत से रात की सेज तक कोई आँसुओं की लकीर है
ज़रा बढ़ के चाँद से पूछना वो उसी तरफ़ से गया न हो

मुझे यूँ लगा कि ख़मोश खुशबू के होंठ तितली ने छू लिये
इन्हीं ज़र्द पत्तों की ओट में कोई फूल सोया हुआ न हो

इसी अहतियात में वो रहा इसी अहतियात में मैं रहा
वो कहाँ कहाँ मेरे साथ है किसी और को ये पता न हो

वो फ़रिश्ते आप तलाश कीजे कहानियों की किताब में
जो बुरा कहें न बुरा सुनें, कोई शख़्स उन से ख़फ़ा न हो

वो फिराक़[1] हो कि विसाल[2] हो तेरी आग महकेगी एक दिन
वो गुलाब बन के खिलेगा क्या जो चराग़ बन के जला न हो

---

1. बिछोह, 2. मिलाप

है अजीब शहर की ज़िन्दगी, न सफ़र रहा न क़याम है
कहीं कारोबार सी दोपहर, कहीं बदमिज़ाज सी शाम है

कहाँ अब दुआओं की बरकतें, वो नसीहतें, वो हिदायतें
ये ज़रूरतों का ख़ुलूस[1] है, ये मतालबों[2] का सलाम है

यूँ ही रोज़ मिलने की आरज़ू बड़ी रखरखाव की गुफ़्तगू
ये शराफ़तें नहीं बे ग़रज़ उसे आप से कोई काम है

वो दिलों में आग लगायेगा मैं दिलों की आग बुझाऊँगा
उसे अपने काम से काम है, मुझे अपने काम से काम है

न उदास हो, न मलाल कर, किसी बात का न ख़याल कर
कई साल बाद मिले हैं हम, तेरे नाम आज की शाम है

कोई नग़मा धूप के गाँव सा, कोई नग़मा शाम की छाँव सा
ज़रा इन परिन्दों से पूछना ये कलाम किस का कलाम है

1. शिष्टता, 2. माँगें

कभी तो शाम ढले अपने घर गये होते
किसी की आँख में रह कर सँवर गये होते

सिंगारदान में रहते हो आईने की तरह
किसी के हाथ से गिरकर बिखर गये होते

ग़ज़ल ने बहते हुए फूल चुन लिये वरना
ग़मों में डूब के हम लोग मर गये होते

अजीब रात थी कल तुम भी आके लौट गये
जब आ गये थे तो पल भर ठहर गये होते

बहुत दिनों से है दिल अपना ख़ाली ख़ाली सा
ख़ुशी नहीं तो उदासी से भर गये होते

कहीं पलकें ओस से धो गई, कहीं दिल को फूलों से भर गई
तेरी याद सोलह सिंगार है, जिसे छू दिया वो सँवर गई

मैं सुनहरे पत्तों का पेड़ हूँ मैं ख़िज़ाँ[1] का हुस्नो वक़ार[2] हूँ
मेरे बाल चाँदी के हो गये, मेरे सर पे धूप ठहर गई

मेरा शायराना सा ख़्वाब थी, जिसे लोग कहते हैं ज़िन्दगी
इन्हीं नाख़ुदाओं[3] के ख़ौफ़ से, वो चढ़ी नदी में उतर गई

तेरी आरज़ू, तेरी जुस्तजू में भटक रहा था गली गली
मेरी दास्ताँ तेरी ज़ुल्फ़ है, जो बिखर बिखर के सँवर गई

उन्हीं दो घरों के क़रीब ही कहीं आग ले के हवा भी थी
न कभी तुम्हारी नज़र गई न कभी हमारी नज़र गई

न ग़मों का मेरे हिसाब ले, न ग़मों का अपने हिसाब दे
वो अजीब रात थी क्या कहें, जो गुज़र गई सो गुज़र गई

---
1. पतझड़, 2. शीलसौंदर्य, 3. नाविकों

कई पेड़ धूप के पेड़ थे तेरी रहमतों से हरे रहे
मेरे नाम आग के फूल थे मेरी झोलियों में भरे रहे

कहीं मालो ज़र[1] के वज़ीर थे कहीं इल्मो फ़न के अमीर थे
वले[1] हम भी ऐसे फ़क़ीर थे जो हमेशा उन से परे रहे

मेरे दिल में दर्द के पेड़ हैं यहाँ कोई खौफ़े ख़िजाँ नहीं
ये दरख़्त कितने अजीब थे सभी मौसमों में हरे रहे

वो कलाम जिन से छतें उड़ीं वहीं शामियानों में दफ़्न हैं
तेरे शेर दिल में उतर गये जो खरे थे सिक्के खरे रहे

1. धन-दौलत

मैं कब तन्हा हुआ था, याद होगा
तुम्हारा फ़ैसला था, याद होगा

बहुत से उजले उजले फूल लेकर
कोई तुम से मिला था, याद होगा

बिछी थीं हर तरफ़ आँखें ही आँखें
कोई आँसू गिरा था, याद होगा

उदासी और बढ़ती जा रही थी
वो चेहरा बुझ रहा था, याद होगा

वो ख़त पागल हवा के आँचलों पर
किसे तुम ने लिखा था, याद होगा

दिखला के यही मंज़र बादल चला जाता है
पानी के मकानों पे कैसे लिखा जाता है

उस मोड़ पे हम दोनों कुछ देर बहुत रोये
जिस मोड़ से दुनिया को इक रास्ता जाता है

दोनों से चलो पूछें उस को कहीं देखा है
इक क़ाफ़ला आता है इक क़ाफ़ला जाता है

इक शमा जलाते हो इक शमा बुझाते हो
ये चाँद उभरता है दिल डूबता जाता है

दुनिया में कहीं इन की तालीम नहीं होती
दो चार किताबों को घर में पढ़ा जाता है

मेरे दिल की राख कुरेद मत इसे मुस्कुरा के हवा दे
ये चराग़ फिर भी चराग़ है कहीं तेरा हाथ जला न दे

नये दौर के नये ख़्वाब हैं नये मौसमों के गुलाब हैं
ये मुहब्बतों के चराग़ है इन्हें नफ़रतों की हवा न दे

ज़रा देख चाँद की पत्तियों ने बिखर बिखर के तमाम शब
तेरा नाम लिक्खा है रेत पर कोई लहर आके मिटा न दे

मैं उदासियाँ न सजा सकूँ कभी जिस्मो-जाँ के मज़ार पर
न दिये जलें मेरी आँख में मुझे इतनी सख़्त सज़ा न दे

मेरे साथ चलने के शौक़ में बड़ी धूप सर पे उठायेगा
तेरा नाक नक़्शा है मोम का कहीं ग़म की आग घुला न दे

मैं ग़ज़ल की शबनमी आँख से ये दुखों के फूल चुना करूँ
मेरी सल्तनत मेरा फ़न रहे मुझे ताजो तख़्त खुदा न दे

वो शाख़ है न फूल, अगर तितलियाँ न हों
वो घर भी कोई घर है जहाँ बच्चियाँ न हों

पलकों से आँसुओं की महक आनी चाहिए
ख़ाली है आसमान अगर बदलियाँ न हों

दुश्मन को भी ख़ुदा कभी ऐसा मकाँ न दे
ताज़ा हवा की जिसमें कहीं खिड़कियाँ न हों

मैं पूछता हूँ मेरी गली में वो आए क्यों
जिस डाकिये के पास तेरी चिट्ठियाँ न हों

अच्छी आँखें सच्चे दिल पूजा करें
आ सनम-ख़ानों[1] में हम सजदा करें

फूल जैसे ख़ूबसूरत ज़ख़्म हैं
ज़िन्दगी से क्या गिला-शिकवा करें

जब वो आएगा, ज़माना आएगा
हम अकेले हैं, अकेले क्या करें

आओ जानाँ![2] बादलों के साथ-साथ
धूप जाती है कहाँ पीछा करें

पलकाँ-पलकाँ रात भर शबनम चुनें
क़तरा-क़तरा[3] जोड़ कर दरिया करें

दूर जायें, दूर से बातें करें
पास आयें, पास से देखा करें

ये मज़ा लेने का मौसम फिर कहाँ
रहमतों की रात है, सजदा करें

---

1. मंदिर 2. प्रिय, 3. बूँद-बूँद

आँसुओं में रची ख़ुशी की तरह
रिश्ते होते हैं शायरी की तरह

जब कभी बादलों में घिरता है
चाँद लगता है आदमी की तरह

सब नज़र का फ़रेब[1] होता है
कोई होता नहीं किसी की तरह

मुस्कुराता-सदा कोई शेर कहो
ज़िन्दगी की हँसी-खुशी की तरह

खूबसूरत, ज़हीन, बच्चों सा
वो है इक्कीसवीं सदी की तरह

---

1. भ्रम, धोखा

चल-चल के रुके, रुक-रुक के चले, जो दिल ने कहा वो हमने किया
सब की मानी, पर शाम ढले, जो दिल ने कहा वो हमने किया

फल-फूल रखें उन क़दमों पर जो सूरज के घर जाते हैं
ये बात कभी उतरी न गले, जो दिल ने कहा वो हमने किया

मौसम के दीनो-मज़हब को हमने अपना मज़हब जाना
फूलों के बदन पलकों से मले, जो दिल ने कहा वो हमने किया

रोशन-रोशन शाख़ों पे खिले, जब शाम ढली ताक़ों[1] में जले
मोती चमके पलकों के तले, जो दिल ने कहा वो हमने किया

मटकी, माखन, गागर छन-छन, रिमझिम-रिमझिम बरसे सावन
सुन्दर-सुन्दर गोदों में पले, जो दिल ने कहा वो हमने किया

1. दीवार में बना छोटा मेहराबदार खोल

तितलियों का मुझे टूटा हुआ पर[1] लगता है
दिल पे वो नाम भी लिखते हुए डर लगता है

रात आई तो सितारों भरी चादर तानी
ख़ूबसूरत मुझे सूरत का सफ़र लगता है

ये भी सोते हुए बच्चे की तरह हँसता है
आग में फूल फ़रिश्तों का हुनर लगता है

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीं
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

मैं तेरे साथ सितारों से गुज़र सकता हूँ
कितना आसान मुहब्बत का सफ़र लगता है

---

1. पंख

अजनबी पेड़ों के साये में मुहब्बत है बहुत
घर से निकले तो ये दुनिया ख़ूबसूरत है बहुत

रात तारों से उलझ सकती है, ज़र्रों से नहीं
रात को मालूम है जुगनू में हिम्मत है बहुत

मुख़्तसर[1] बातें करो, बेजा[2] वज़ाहत[3] मत करो
इस नई दुनिया के बच्चों में ज़हानत[4] है बहुत

किसलिए हम दिल जलायें, रात-दिन मेहनत करें
क्या ज़माना है, बुरे लोगों की इज़्ज़त है बहुत

सात सन्दूक़ों में भर कर दफ़्न कर दो नफ़रतें
आज इन्साँ को मुहब्बत की ज़रूरत है बहुत

लोग ज़िम्मेदारियों की क़ैद से आज़ाद हैं
शहर की मसरूफियत[5] में घर से फ़ुर्सत है बहुत

धूप से कहना मुझे किरनों का कम्बल भेज दे
ग़ुर्बतों[6] का दौर है, जाड़े की शिद्दत है बहुत

सच अदालत से सियासत तक बहुत मसरूफ़[7] है
झूठ बोलो, झूठ में अब भी मुहब्बत है बहुत

---

1. संक्षिप्त, 2. असंगत, बेकार, 3. विस्तार, 4. समझदारी 5. व्यस्तता, कार्य-भार, 6. निर्धनता, ग़रीबी, 7. व्यस्त

मैं घना अँधेरा हूँ, आज मेरी पलकों पर जुगनुओं के घर रख दो
ख़ुशबुओं से नहला दो इन सुलगती पलकों पर तितलियों के पर[1] रख दो

मैं भी इक शजर[2] ही हूँ जिसपे आज तक शायद फूल-फल नहीं आए
तुम मेरी हथेली पर एक रात चुपके से बर्फ़ के समर[3] रख दो

धूप का हर इक बजरा आग के समन्दर में चल पड़े हमें लेने
नर्म-नर्म होंठों से बन्द होती पलकों पर तितलियों के पर रख दो

चाहे कोई मौसम हो, दिन गई बहारों के फिर से लौट आयेंगे
एक फूल की पत्ती अपने होंठ पर रखकर मेरे होंठ पर रख दो

मेरा तन दरख़्तों में इसलिए सुलगता है, सख़्त धूप सहता है
क्या पता तुम आ निकलो और मेरे कांधों पर थक के अपना सर रख दो

रोज़ तार कटने से रात के समन्दर में शहर डूब जाता है
इसलिए ज़रूरी है कि इक दिया जलाकर तुम दिल की ताक़ पर रख दो

---

1. पंख, 2. वृक्ष, 3. फल

बेसदा[1] ग़ज़लें न लिख वीरान राहों की तरह
ख़ामुशी अच्छी नहीं आहों-कराहों की तरह

लोग होते हैं यहाँ दो-चार घंटों के लिए
ज़िन्दगी बेख़्वाब[2] है मसरूफ़[3] राहों की तरह

तुमने दिल्ली देखी, पर दिल्ली का दुख देखा नहीं
ग़म हुकूमत कर रहे हैं कज-कुलाहों[4] की तरह

मस्जिदों में उनके दामन पर फ़रिश्तों की नमाज़
घर में रखते हैं कनीज़ें बादशाहों की तरह

हमने सब रोज़े नहीं रखे मगर उसका करम[5]
दिल में होती हैं नमाज़ें ईदगाहों की तरह

हर क़दम आँखें बिछी हैं मैं कहाँ पावँ धरूँ
रास्ता रोके हैं शाख़ें तेरी बाँहों की तरह

'बद्र' साहिब की ग़ज़ल पर रात हम रोये बहुत
जश्ने-ग़म दिल ने मनाया ख़ानक़ाहों[6] की तरह

---

1. गूँगी, बिना किसी आवाज़ के, 2. जागी हुई, 3. व्यस्त, 4. स्वाभिमानियों, 5. दया-भाव 6. पीरों-फ़क़ीरों के निवास-स्थलों

मेरी ज़िन्दगी भी मेरी नहीं ये हज़ार ख़ानों में बट गई
मुझे एक मुट्ठी ज़मीन दे, ये ज़मीन कितनी सिमट गई

तेरी याद आये तो चुप रहूँ ज़रा चुप रहूँ तो ग़ज़ल कहूँ
ये अजीब आग की बेल थी मेरे तन बदन से लिपट गई

मुझे लिखने वाला लिखे भी क्या, मुझे पढ़ने वाला पढ़े भी क्या
जहाँ मेरा नाम लिखा गया वहीं रोशनाई[1] उलट गई

न कोई ख़ुशी न मलाल है कि सभी का एक सा हाल है
तेरे सुख के दिन भी गुज़र गये मेरी ग़म की रात भी कट गई

मेरी बन्द पलकों पे टूट कर कोई फूल रात बिखर गया
मुझे सिस्कियों ने जगा दिया मेरी कच्ची नींद उचट गई

---

1. लिखने की स्याही

पके गेहूँ की ख़ुशबू चीखती है
बदन अपना सुनहरा हो चुका है

हमारी शाख़ का नौख़ेज़ पत्ता
हवा के होंठ अक्सर चूमता है

अन्धेरी रात का तन्हा मुसाफ़िर
मेरी पलकों पे अब सहमा हुआ है

समेटो और सीने में छुपा लो
ये सन्नाटा बहुत फैला हुआ है

हक़ीक़त सुर्ख़ मछली जानती है
समन्दर कितना बूढ़ा देवता है

मुझे इन नीली आँखों ने बताया
तुम्हारा नाम पानी पे लिखा है

1. नवोदित

बड़ी आग है, बड़ी आँच है, तेरे मैकदे[1] के गुलाब में
कई बालियाँ, कई चूड़ियाँ यहाँ घुल रही हैं शराब में

वो सरापा[2] हुस्नो जमाल है, वो तेरे सुख़न का कमाल है
कोई एक शेर न कह सका कभी इस ग़ज़ल के जवाब में

वही लिखने पढ़ने का शौक़ था, वही लिखने पढ़ने का शौक़ है
तेरा नाम लिखना किताब पर, तेरा नाम पढ़ना किताब में

मेरे ज़र्द पत्तों की चादरें भी हवायें छीन के ले गईं
मैं अजब गुलाब का फूल हूँ, जो बरहना[3] सर है शबाब में

ये दुआ है ऐसी ग़ज़ल कहूँ, कभी पेश जिसको मैं कर सकूँ
कोई हर्फ़ तेरे हुज़ूर में, कोई शेर तेरी जनाब में

1. शराबख़ाना, 2. सिर से पैर तक, 3. नग्न

दिल पे छाया रहा उमस की तरह
एक लम्हा था सौ बरस की तरह

वो मोहब्बत की तरह पिघलेगी
मैं भी मर जाऊँगा हवस की तरह

रात सर पर लिये हूँ जंगल में
रास्ते की ख़राब बस की तरह

आत्मा बेज़बान मैना है
और माटी का तन क़फ़स[1] की तरह

ख़ानक़ाहों[2] में ख़ाक़ उड़ती है
उर्दू वालों के कैम्पस की तरह

मौत की वादियों से गुज़रूँगा
मैं पहाड़ों की एक बस की तरह

---

1. पिंजरा 2. दरगाहों, आश्रमों

सरे राह कुछ भी कहा नहीं कभी उसके घर में गया नहीं
मैं जनम जनम से उसी का हूँ उसे आज तक ये पता नहीं

उसे पाक नज़रों से चूमना भी इबादतों में शुमार है
कोई फूल लाख क़रीब हो कभी मैं ने उसको छुआ नहीं

ये ख़ुदा की देन अजीब है कि इसी का नाम नसीब है
जिसे तू ने चाहा वो मिल गया जिसे मैं ने चाहा मिला नहीं

इसी शहर में कई साल से मेरे कुछ क़रीबी अज़ीज़ हैं
उन्हें मेरी कोई ख़बर नहीं मुझे उन का कोई पता नहीं

अब तेरे मेरे बीच ज़रा फ़ासला भी हो
हम लोग जब मिलें तो कोई दूसरा भी हो

तू जानता नहीं मेरी चाहत अजीब है
मुझ को मना रहा है कभी ख़ुद ख़फ़ा भी हो

तू बेवफ़ा नहीं है मगर बेवफ़ाई कर
उसकी नज़र में रहने का कुछ सिलसिला भी हो

पतझड़ के टूटते हुए पत्तों के साथ साथ
मौसम कभी तो बदलेगा ये आसरा भी हो

चुपचाप उसको बैठ के देखूँ तमाम रात
जागा हुआ भी हो कोई सोया हुआ भी हो

उस के लिये तो मैं ने यहाँ तक दुआयें कीं
मेरी तरह से कोई उसे चाहता भी हो

वही ताज है वही तख़्त है वही ज़हर है वही जाम है
ये वही ख़ुदा की ज़मीन है ये वही बुतों का निज़ाम है

बड़े शौक़ से मेरा घर जला कोई आँच तुझ पे न आयेगी
ये जुबाँ किसी ने ख़रीद ली, ये क़लम किसी का ग़ुलाम है

यहाँ एक बच्चे के ख़ून से जो लिखा हुआ है उसे पढ़ें
तेरा कीर्तन अभी पाप है अभी मेरा सजदा हराम है

मैं ये मानता हूँ मेरे दिये तेरी आँधियों ने बुझा दिये
मगर एक जुगनू हवाओं में अभी रोशनी का इमाम है

मेरे फ़िक्रो फ़न तेरी अंजुमन, न उरूज था न ज़वाल[1] है
मेरे लब पे तेरा ही नाम था मेरे लब पे तेरा ही नाम है

1. पतन

कौन आया रास्ते आईना ख़ाने हो गये
रात रोशन हो गई दिन भी सुहाने हो गये

क्यों हवेली के उजड़ने का मुझे अफ़सोस हो
सैकड़ों बेघर परिन्दों के ठिकाने हो गये

जाओ इन कमरों के आईने उठाकर फेंक दो
बे अदब ये कह रहे हैं हम पुराने हो गये

ये भी मुमकिन है कि मैं ने उस को पहचाना न हो
अब उसे देखे हुए कितने ज़माने हो गये

मेरी पलकों पर ये आँसू प्यार की तौहीन थे
उसकी आँखों से गिरे मोती के दाने हो गये

वो बुझे घरों का चराग़ था ये कभी किसी को ख़बर न हो
उसे ले गई है कहाँ हवा, ये कभी किसी को ख़बर न हो

कई लोग जान से जायेंगे मरे क़ातिलों को तलाश में
मेरे क़त्ल में मेरा हाथ था, ये कभी किसी को ख़बर न हो

वो तमाम दुनिया के वास्ते जो मुहब्बतों की मिसाल था
वही अपने घर में था बेवफ़ा, ये कभी किसी को ख़बर न हो

कहीं मस्जिदों में शहादतें कहीं मंदिरों में अदालतें
यहाँ कौन करता है फैसला ये कभी किसी को ख़बर न हो

मुझे जानकर कोई अनजबी वो दिखा रहे हैं गली गली
इसी शहर में मेरा घर भी था, ये कभी किसी को ख़बर न हो

वो समझ के धूप के देवता मुझे आज पूजने आये हैं
मैं चराग़ हूँ तेरी शाम का, ये कभी किसी को ख़बर न हो

माटी की कच्ची गागर को क्या खोना, क्या पाना, बाबा
माटी को माटी रहना है, माटी में मिल जाना बाबा

हम क्या जानें दीवारों से कैसे धूप उतरती होगी
रात रहे बाहर जाना है, रात गए घर आना बाबा

जिस लकड़ी को अन्दर-अन्दर दीमक बिल्कुल चाट चुकी हो
उसको ऊपर से चमकाना, राख पे धूप जमाना बाबा

छत के ऊपर बादल बरसें, छत के नीचे अपनी आँखें
तन की इस गीली मिट्टी को घुल-घुल कर बह जाना बाबा

प्यार की गहरी फुँकारों से सारा बदन आकाश हुआ है
दूध पिलाना, तन डसवाना, है दस्तूर पुराना बाबा

इन ऊँचे शहरों से पैदल सिर्फ़ देहाती ही चलते हैं
हमको बाज़ारों से इक दिन काँधे पर ले जाना बाबा

पानी के हम झूटे मोती कैसे पलकों पर रुक जायें
नद्दी को दरिया, दरिया को सागर में मिल जाना बाबा

धूप नई पोशाकें बदले मौसम की कश्ती पर तैरे
राख का कुर्ता, धूल की लुंगी, अपना भेस पुराना बाबा

अच्छा तुम्हारे शहर का दस्तूर हो गया
जिसको गले लगा लिया वो दूर हो गया

काग़ज़ में दब के मर गए कीड़े किताब के
दीवाना बिन पढ़े-लिखे मशहूर हो गया

सुबहे-विसाल[1] पूछ रही है अजब सवाल
वो पास आ गया कि बहुत दूर हो गया

तनहाइयों ने तोड़ दी हम दोनों की अना[2]
आईना बात करने पे मजबूर हो गया

महलों में हमने कितने सितारे सजा दिए
लेकिन ज़मीं से चाँद बहुत दूर हो गया

---

1. मिलन के बाद की सुबह, 2. अहं

आग लहरा के चली है इसे आँचल कर दो
तुम मुझे रात का जलता हुआ जंगल कर दो

चाँद-सा मिस्रा[1] अकेला है मेरे काग़ज़ पर
छत पे आ जाओ मेरा शेर मुकम्मल कर दो

मैं तुम्हें दिल की सियासत[2] का हुनर देता हूँ
अब उसे धूप बना दो, मुझे बादल कर दो

अपने आँगन की उदासी से ज़रा बात करो
नीम के सूखे हुए पेड़ को संदल[3] कर दो

तुम मुझे छोड़ के जाओगे तो मर जाऊँगा
यूँ करो, जाने से पहले मुझे पागल कर दो

---

1. शेर की कोई एक पंक्ति, 2. राजनीति, 3. चंदन

सर-सर हवा में सरके है संदल की ओढ़नी
झुक-झुक पलक को चूमे है काजल की ओढ़नी

मुद्दत के बाद धूप की खेती हरी हुई
अब के बरस बरस गई बादल की ओढ़नी

मौसम से मिलता-जुलता तुम्हारा मिज़ाज है
भारी कभी दिलाई, कभी हलकी ओढ़नी

कोहरे की वादियों में उतरने लगी है रात
फिर सर्दियों ने ओढ़ ली कम्बल की ओढ़नी

रेशम की चादरों-सी वो चिकनी पहाड़ियाँ
कल धूप की ढलान से क्या ढलकी ओढ़नी

ये आज है, तू आज की चादर तलाश कर
अच्छे दिनों के वास्ते रख कल की ओढ़नी

कितने लिबास शहर बदलता है शाम तक
हर रात झिलमिलाती है जंगल की ओढ़नी

कारों से झाँकते हुए ख़ुशबू के पैरहन[1]
पैदल के वास्ते वही डीज़ल की ओढ़नी

---

1. लिबास

यूँ ही बेसबब न फिरा करो, कोई शाम घर भी रहा करो
वह ग़ज़ल की सच्ची किताब है उसे चुपके चुपके पढ़ा करो

कोई हाथ भी न मिलायेगा जो गले मिलोगे तपाक से
ये नये मिज़ाज का शहर है ज़रा फ़ासले से मिला करो

अभी राह में कई मोड़ हैं कोई आयेगा कोई जायेगा
तुम्हें जिसने दिल से भुला दिया उसे भूलने की दुआ करो

मुझे इश्तहार सी लगती हैं ये मुहब्बतों की कहानियाँ
जो कहा नहीं वो सुना करो जो सुना नहीं वो कहा करो

कभी हुस्ने परदा नशीं[1] भी हो ज़रा आशिक़ाना लिबास में
जो मैं बन सँवर के कहीं चलूँ मेरे साथ तुम भी चला करो

नहीं बे हिजाब[2] वो चाँद सा कि नज़र का कोई असर न हो
उसे इतनी गरमि-ए-शौक़ से बड़ी देर तक न तका करो

ये ख़िज़ाँ की ज़र्द सी शाल में जो उदास पेड़ के पास है
ये तुम्हारे घर की बहार है इसे आँसुओं से हरा करो

---

1. पर्दादार प्रेमिका, 2. बेशर्म

कोई फूल धूप की पत्तियों में हरे रिबन से बँधा हुआ
वो ग़ज़ल का लहज़ा नया नया न कहा हुआ न सुना हुआ

जिसे ले गई है अभी हवा वो वरक़ था दिल की किताब का
कहीं आँसुओं से मिटा हुआ कहीं आँसुओं से लिखा हुआ

कई मील रेत को काट कर कोई मौज फूल खिला गई
कोई पेड़ प्यास से मर रहा है नदी के पास खड़ा हुआ

वही ख़त के जिस पे जगह जगह दो महकते होंठों के चाँद थे
किसी भूले बिसरे से ताक़ पर तहे गर्द होगा दबा हुआ

मुझे हादसों ने सजा सजा के बहुत हसीन बना दिया
मेरा दिल भी जैसे दुल्हन का हाथ हो मेंहदियों से रचा हुआ

वही शहर है वही रास्ते वही घर है और वही लान भी
मगर उस दरीचे[1] से पूछना वो दरख़्त अनार का क्या हुआ

मेरे साथ जुगनू है हमसफ़र मगर शरर[2] की बिसात क्या
ये चिराग़ कोई चिराग़ है न जला हुआ न बुझा हुआ

---

1. खिड़की 2. चिंगारी

अभी इस तरफ न निगाह कर मैं ग़ज़ल की पलकें सँवार लूँ
मेरा लफ़्ज़ हो आईना तुझे आईने में उतार लूँ

मैं तमाम दिन का थका हुआ तू तमाम शब का जगा हुआ
ज़रा ठहर जा उसी मोड़ पर तेरे साथ शाम गुज़ार लूँ

अगर आसमाँ की नुमायशों में मुझे भी इज़्ने क़याम[1] हो
तो मैं मोतियों की दुकान से तेरी बालियाँ तेरे हार लूँ

कहीं और बाँट दे शोहरतें कहीं और बख़्श दे इज़्ज़तें
मेरे पास है मेरा आईना मैं कभी न गर्द ओ ग़ुबार लूँ

कई अनजबी तेरी राह में मेरे पास से यूँ गुज़र गये
जिन्हें देखकर ये तड़प हुई तेरा नाम ले के पुकार लूँ

---

1. रुकने की अनुमति

कभी यूँ भी आ मेरी आँख में कि मेरी नज़र को ख़बर न हो
मुझे एक रात नवाज़ दे मगर इस के बाद सहर न हो

वो बड़ा रहीम ओ करीम[1] है मुझे ये सिफ़त[2] भी अता करे
तुझे भूलने की दुआ करूँ तो मेरी दुआ में असर न हो

मेरे बाज़ुओं में थकी थकी अभी महवे-ख़्वाब[3] है चाँदनी
न बुझे ख़राबे[4] की रोशनी, कभी बे-चिराग़ ये घर न हो

कभी दिन की धूप में झूम के कभी शब के फूल को चूम के
यूँ ही साथ साथ चलें सदा कभी ख़त्म अपना सफ़र न हो

---

1. दयालु, 2. गुण, 3. सपनों में डूबी, 4. उजाड़

सब कुछ ख़ाक हुआ है लेकिन चेहरा क्या नूरानी[1] है
पत्थर नीचे बैठ गया है ऊपर बहता पानी है

बचपन से मेरी आदत है फूल छुपा कर रखता हूँ
हाथों पर जलता सूरज है दिल में रात की रानी है

दफ़्न हुए रातों के क़िस्से इक छत की ख़मोशी में
सन्नाटों की चादर ओढ़े ये दीवार पुरानी है

इस को पाकर इतराओगे खो कर जान गँवा दोगे
बादल का साया है दुनिया हर शै[2] आनी जानी है

दिल अपना इक चाँद नगर है अच्छी सूरत वालों का
शहर में आकर शायद हम को ये जागीर गँवानी है

तेरे बदन पर मैं फूलों से इस लम्हे का नाम लिखूँ
जिस लम्हे का मैं अफ़साना तू भी एक कहानी है

---

1. तेजस्वी 2. चीज़

कभी यूँ मिलें, कोई मसलहत[1], कोई खौफ़ दिल में ज़रा न हो
मुझे अपनी कोई ख़बर न हो, तुझे अपना कोई पता न हो

कभी धूप दे कभी बदलियाँ दिलो जाँ से दोनों क़ुबूल हैं
मगर उस महल में न क़ैद कर जहाँ ज़िन्दगी की हवा न हो

वो हज़ार बाग़ों का बाग़ हो तेरी बरकतों की बहार से
जहाँ कोई शाख़ हरी न हो जहाँ कोई फूल खिला न हो

तेरे इख़्तियार[2] में क्या नहीं मुझे इस तरह से नवाज़[3] दे
यूँ दुआएँ मेरी क़ुबूल हों मेरे लब पे कोई दुआ न हो

कभी हम भी उसके क़रीब थे दिलो जाँ से बढ़ के अज़ीज़ थे
मगर आज ऐसे मिला है वो कभी पहले जैसे मिला न हो

---

1. समझौता, अच्छे-बुरे का ख़याल रखना, 2. अधिकार क्षेत्र, 3. प्रसन्न कर दे

आग को गुलज़ार कर दे बर्फ़ को दरिया करे
देखने वाला तेरी आवाज़ को देखा करे

उसकी रहमत ने मेरे बच्चे के माथे पर लिखा
इस परिन्दे के परों में आस्माँ सजदा करे

एक मुट्ठी ख़ाक थे हम एक मुट्ठी ख़ाक हैं
उसकी मरज़ी हैं हमें सहरा करे दरिया करे

दिन का शहज़ादा मेरा मेहमान है आये ज़रूर
रात का भूला मुसाफ़िर भी यहाँ ठहरा करे

आज पाकिस्तान की इक शाम याद आयी बहुत
क्या ज़रूरी है कि बेटी बाप से पर्दा करे

इबादतों[1] की तरह मैं ये काम करता हूँ
मेरा उसूल है पहले सलाम करता हूँ

मुखालफ़त[2] से मेरी शख्सियत[3] संवरती है
मैं दुश्मनों का बड़ा एहतराम[4] करता हूँ

मैं अपनी जेब में अपना पता नहीं रखता
सफ़र में सिर्फ़ यही एहतमाम[5] करता हूँ

मैं डर गया हूँ बहुत सायादार पेड़ों से
ज़रा सी धूप बिछाकर क़याम[6] करता हूँ

मुझे खुदा ने ग़ज़ल का दयार[7] बख़्शा है
यह सल्तनत मैं मुहब्बत के नाम करता हूँ

1. पूजा, 2. शत्रुता, विरोध, 3. व्यक्तित्व, 4. आदर, सम्मान, 5. इंतज़ाम, प्रबंध, 6. विश्राम, 7. प्रवेश द्वार

परखना मत, परखने में कोई अपना नहीं रहता
किसी भी आइने में देर तक चेहरा नहीं रहता

बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फासला रखना
जहाँ दरिया समन्दर से मिला दरिया नहीं रहता

हजारों शेर मेरे सो गये काग़ज़ की क़ब्रों में
अजब माँ हूँ कोई बच्चा मेरा ज़िंदा नहीं रहता

मुहब्बत एक खुशबू है हमेशा साथ चलती है
कोई इन्सान तन्हाई में भी तन्हा नहीं रहता

कोई बादल नये मौसम का फिर ऐलान करता है
खिज़ां के बाग़ में जब एक भी पत्ता नहीं रहता

तुम्हारा शहर तो बिल्कुल नये अन्दाज वाला है
हमारे शहर में भी अब कोई हम सा नहीं रहता

नाम उसी का नाम सवेरे शाम लिखा
शेर लिखा या ख़त उसको गुमनाम लिखा

उस दिन पहला फूल खिला जब पतझड़ ने
पत्ती पत्ती तोड़ के तेरा नाम लिखा

उस बच्चे की कापी अक्सर पढ़ता हूँ
सूरज के माथे पर जिसने शाम लिखा

कैसे दोनों वक्त गले मिलते हैं रोज़
ये मंज़र मैंने दुश्मन के नाम लिखा

हिन्दुस्तान का मज़हब दिल का मज़हब है
प्यार को पूजा चाहत को इस्लाम लिखा

मन्दिर मस्जिद पानी की दीवारें हैं
पानी की दीवार पे किसने नाम लिखा

'मीर' 'कबीर' 'बशीर' इसी मकतब के[1] हैं
आ दिल के मकतब में अपना नाम लिखा

---

1. पाठशाला

आइना धूप का दरिया में दिखाता है मुझे
मेरा दुश्मन मेरे लहजे में बुलाता है मुझे

आँसुओं से मेरी तहरीर नहीं मिट सकती
कोई काग़ज़ हूँ कि पानी से डराता है मुझे

सर पे सूरज की सवारी मुझे मंजूर नहीं
अपना क़द धूप में छोटा नज़र आता है मुझे

रोज़ कहता है कि गिरती हुई दीवार हूँ मैं
एक बादल है जो रह रह के डराता है मुझे

दूध पीते हुए बच्चे की तरह है दिल भी
दिन में सो जाता है रातों को जगाता है मुझे

खूबसूरत है बहुत रात की तन्हाई भी
सात रंगों में तेरा दर्द सजाता है मुझे

ऐसा लगता है कि उसने मुझे ग़ालिब समझा
न उठाता है मुझे और न बिठाता है मुझे

मैं जमीं ता आसमाँ वो कैद आतिशदान में
धूप रिश्ता बन गयी सूरज में और इन्सान में

मैं बहुत दिन तक चमकती धूप का आँगन रहा
एक दिन फिर यूँ हुआ शाम आ गई दालान में

किसके अंदर क्या छुपा है कुछ पता चलता नहीं
तेल की दौलत मिली मैदान रेगिस्तान में

शक्ल सूरत नाम पहनावा जुबाँ अपनी जगह
फ़र्क़ वर्ना कुछ नहीं इन्सान और इन्सान में

इन नई नस्लों ने सूरज आज तक देखा नहीं
रात हिन्दुस्तान में है रात पाकिस्तान में

दारू से इनकार करेगा, चल झूटे
तू बच्चों से प्यार करेगा, चल झूटे

छइयाँ छइयाँ चुल्लू चुल्लू पानी पी
दिल का दरिया पार करेगा, चल झूठे

आँसू दरिया, आँखें कश्ती मान लिया
पलकों को पतवार करेगा, चल झूटे

दिल को अब तेज़ाब से धोना पड़ता है
गंगाजल बेकार करेगा चल झूटे

मन्दिर मसजिद का झगड़ा हलवा पूड़ी
पूजा दुनियादार करेगा चल झूटे

दोहों में ग़ज़लों की लटकन ठीक नहीं
लुंगी को सलवार करेगा चल झूटे

मीर, कबीर, नज़ीर, बशीर के जलवे हैं
ग़ालिब क्या दरबार करेगा, चल झूटे

चाँदनी रात है घर धूप का घर लगता है
दिल मेरा आग में उड़ता हुआ पर लगता है

आज अहसास में इक साँप छुपा बैठा है
फूल से हाथ मिलाते हुए डर लगता है

ज़िन्दगी तूने मुझे क़ब्र से कम दी है ज़मीन
पाँव फैलाऊँ तो दीवार में सर लगता है

चाँद मेहराब पे सोई हुई इक आयत है
बेवज़ू आँखें हैं, पढ़ते हुए डर लगता है

बुत भी रक्खे हैं नमाज़ें भी अदा होती हैं
ये मेरा दिल नहीं, अल्लाह का घर लगता है।

जागी हुई ग़जल कभी सोई हुई ग़ज़ल
हरदम तेरे ख्याल में खोई हुई ग़ज़ल

पलकों के सायबां तले झिलमिल सी चाँदनी
मीरा के आँसुओं में भिगोई हुई ग़ज़ल

पतझड़ के साथ-साथ बड़ी दूर तक गई
इस बार शाख-शाख पिरोई हुई ग़ज़ल

सोई है गहरी नींद में बेख़्वाब रेत पर
अहसास की नदी में डुबोई हुई ग़ज़ल

हम बिस्तरी में धूप सा खरगोश मह्वे-ख़्वाब[1]
खाली नहीं लिहाफ़ में सोई हुई ग़ज़ल

---

1. सपने में खोया

रात आँखों में ढली पलकों पे जुगनूँ आए
हम हवाओं की तरह जाके उसे छू आए

बस गई है मेरे अहसास में ये कैसी महक
कोई खुशबू मैं लगाऊँ तेरी खुशबू आए

उसने छू कर मुझे पत्थर से फिर इंसान किया
मुद्दतों बाद मेरी आँखों में आँसू आए

मेरा आईना भी अब मेरी तरह पागल है
आईना देखने जाऊँ तो नज़र तू आए

किस तकल्लुफ़ से गले मिलने का मौसम आया
कुछ काग़ज़ के फूल लिये काँच के बाजू आए

उन फ़कीरों को ग़ज़ल अपनी सुनाते रहियो
जिनकी आवाज़ में दरगाहों की खुशबू आए।

सर झुकाओगे तो पत्थर देवता हो जाएगा।
इतना मत चाहो उसे वो बेवफ़ा हो जाएगा।।

हम भी दरिया हैं हमें अपना हुनर मालूम है।
जिस तरफ भी चल पड़ेंगे रास्ता हो जाएगा।।

इतनी सच्चाई से, मुझसे ज़िन्दगी ने कह दिया।
तू नहीं मेरा तो कोई दूसरा हो जाएगा।।

मैं खुदा का नाम लेकर पी रहा हूँ दोस्तो।
ज़हर भी इसमें अगर होगा दवा हो जाएगा।।

सब उसी के हैं, हवा, खुशबू, ज़मीनो-आस्माँ।
मैं जहाँ भी जाऊँगा उसको पता हो जाएगा।

उदास चाँद सितारों को हमने छोड़ दिया
हवा के साथ चले और हवा को मोड़ दिया

हर आसमान को हमने ज़मीन बख्शी है
ज़मीन सख्त थी दिल का लहू निचोड़ दिया

वो जानता है अकेला कहाँ मैं जाऊँगा
इसीलिये तो मेरा हाथ उसने छोड़ दिया

हज़ार साल का क़िस्सा तमाम होता है
ज़मीं का एक वरक़ आसमाँ ने मोड़ दिया

तमाम ज़िन्दगी अपनी ग़ज़ल के नाम लिखे
हर एक फैसला हमने ख़ुदा पे छोड़ दिया।

ग़ज़ल को माँ की तरह बावक़ार करता हूँ
मैं ममता के कटोरों में दूध भरता हूँ

तू आईना है तुझे देख कर सँवरता हूँ।
कहाँ-कहाँ तेरा चेहरा तलाश करता हूँ

बदन समेट के ले जाए जैसे शाम की धूप
तुम्हारे शहर से मैं इस तरह गुज़रता हूँ

यह देखा हिज्र तेरा कितना खूबसूरत है
अजीब मर्द हूँ सोला सिंगार करता हूँ

तमाम दिन का सफ़र करके रोज शाम के बाद
पहाड़ियों से घिरी क़ब्र में उतरता हूँ

मुझे सुकून घने जंगलों में मिलता है
मैं रास्तों से नहीं मंज़िलों से डरता हूँ

यार कह दे के जिन्दगी क्या है,
इक अजब सी ये बंदगी क्या है।

हुस्न जल्वों में हुई उम्र तमाम,
आज ये दिल पे सादगी क्या है।

एक ही तौर पर लिखे जाना,
इससे ज्यादा तो बंदगी क्या है।

खुल गए अब तो फ़रेबात[1] सभी,
अब तमाशाए-पीरगी[2] क्या है।

पहले अहसास नहीं होता था,
अब ये अहसासे-बेख़ुदी क्या है।

उसने सब कुछ तुम्हें बता डाला,
उसकी ये दोस्त सादगी क्या है।

सुबह से शाम ताकना सागर,
ये भी साहिल[3] सी ज़िन्दगी क्या है।

---

1. छल-कपट, 2. महात्मा होने का तमाशा, 3. किनारा

सात रंगों के शामियाने हैं
दिल के मौसम बड़े सुहाने हैं

कोई तदबीर[1] भूलने की नहीं
याद आने के सौ बहाने हैं

दिल की बस्ती अभी कहाँ बदली
ये मौहल्ले बहुत पुराने हैं

हक़ हमारा नहीं दरख़्तों पर
ये परिन्दों के आशियाने हैं

इल्मो[2] हिकमत[3], सियासतो[4] मज़हब[5]
अपने अपने शराबख़ाने हैं

धूप का प्यार ख़ूबसूरत है
आग के फूल भी सुहाने हैं

---

1. उपाय, 2. विद्या, 3. बुद्धिमत्ता, 4. राजनीति, 5. धर्म

दालानों की धूप, छतों की शाम कहाँ
घर से बाहर घर जैसा आराम कहाँ

मैं उसको पहचान नहीं पाया तो क्या
याद उसे भी आया मेरा नाम कहाँ

चन्दा के बस्ते में सूखी रोटी है
काजू, किशमिश, पिस्ते और बादाम कहाँ

लोगों को सूरज का धोखा होता है
आँसू बनकर चमका मेरा नाम कहाँ

दिन भर सूरज किसका पीछा करता है
रोज़ पहाड़ी पर से जाती शाम कहाँ

किताबें, रिसाले[1] न अख़बार पढ़ना
मगर दिल को हर रात इक बार पढ़ना

सियासत[2] की अपनी अलग इक ज़बाँ है
लिखा हो जो इक़रार, इनकार पढ़ना

अलामत[3] नए शहर की है सलामत
हज़ारों बरस की ये दीवार पढ़ना

किताबें, किताबें, किताबें, किताबें
कभी तो वो आँखें, वो रुख़सार[4] पढ़ना

मैं काग़ज़ की तक़दीर पहचानता हूँ
सिपाही को आता है तलवार पढ़ना

बड़ी पुरसुकूँ[5] धूप जैसे वो आँखें
किसी शाम झीलों के उस पार पढ़ना

ज़बानों की ये ख़ूबसूरत इकाई
ग़ज़ल के परिन्दों का अशआर[6] पढ़ना

1. पत्रिका, 2. राजनीति, 3. पहचान, 4. गाल, 5. चैनभरी, 6. शेर का बहुवचन/कविता का चरण

मेरे बारे में हवाओं से वो कब पूछेगा
ख़ाक जब ख़ाक में मिल जाएगी तब पूछेगा

घर बसाने में ये ख़तरा है कि घर का मालिक
रात में देर से आने का सबब[1] पूछेगा

अपना ग़म सबको बताना है तमाशा करना
हाले दिल उसको सुनाएँगे वो जब पूछेगा

जब बिछड़ना भी तो हँसते हुए जाना वरना
हर कोई रूठ के जाने का सबब पूछेगा

हमने लफ़्ज़ों के जहाँ दाम लगे बेच दिया
शेर पूछेगा हमें अब न अदब[2] पूछेगा

---

1. कारण, 2. शिष्टाचार

मुझको अपनी नज़र ऐ ख़ुदा चाहिए
कुछ नहीं और इसके सिवा चाहिए

एक दिन तुझसे मिलने ज़रूर आऊँगा
ज़िन्दगी मुझको तेरा पता चाहिए

इस ज़माने ने लोगों को समझा दिया
तुमको आँखें नहीं आईना चाहिए

तुमसे मेरी कोई दुश्मनी तो नहीं
सामने से हटो, रास्ता चाहिए

किसी की याद में पलकें ज़रा भिगो लेते
उदास रात की तनहाइयों में रो लेते

दुखों का बोझ अकेले नहीं सँभलता है
कहीं वो मिलता तो उससे लिपट के रो लेते

अगर सफ़र में हमारा भी हमसफ़र होता
बड़ी ख़ुशी से इन्हीं पत्थरों पे सो लेते

तुम्हारी राह में शाख़ों पे फूल सूख गए
कभी हवा की तरह इस तरफ़ भी हो लेते

ये क्या कि रोज़ वही चाँदनी का बिस्तर हो
कभी तो धूप की चादर बिछा के सो लेते

ख़ुशबू की तरह आया वो तेज़ हवाओं में
माँगा था जिसे हमने दिन रात दुआओं में

तुम छत पे नहीं आए, मैं घर से नहीं निकला
ये चाँद बहुत भटका सावन की घटाओं में

इस शहर में इक लड़की बिल्कुल है ग़ज़ल जैसी
बिजली सी घटाओं में, ख़ुशबू सी हवाओं में

मौसम का इशारा है खुश रहने दो बच्चों को
मासूम मुहब्बत है फूलों की ख़ताओं[1] में

भगवान ही भेजेंगे चावल से भरी थाली
मज़लूम[2] परिन्दों की मासूम सभाओं में

दादा बड़े भोले थे, सबसे यही कहते थे
कुछ ज़हर भी होता है अँग्रेज़ी दवाओं में

1. भूल, 2. पीड़ित

तू मुझसे तेज़ चलेगा तो रास्ता दूँगा
दुआ के फूल तेरी राह में बिछा दूँगा

अभी तो ज़िन्दगी हायल[1] तुझसे मिलने में
मैं आज रात ये दीवार भी गिरा दूँगा

अगर किसी ने मुझे एक रात रोक लिया
तो उसका नाम पता भी तुझे बता दूँगा

वो अजनबी है मगर आज उसकी ख़ातिर मैं
पढ़े बग़ैर अज़ीज़ों के ख़त जला दूँगा

वो चाँद जब मेरी पलकों पे फूल रक्खेगा
मैं अपने बच्चे को इक आसमाँ नया दूँगा

---

1. रोकने वाला

जब सहर चुप हो, हँसा लो हमको
जब अन्धेरा हो, जला लो हमको

हम हक़ीक़त हैं, नज़र आते हैं
दास्तानों में छुपा लो हमको

खून का काम रवाँ रहना है
जिस जगह चाहो, बहा लो हमको

दिन न पा जाए कहीं शब का राज़
सुब्ह से पहले उठा लो हमको

दूर हो जाएँगे सूरज की तरह
हम न कहते थे, उछालो हमको

हम ज़माने के सताए हैं बहुत
अपने सीने से लगा लो हमको

वक़्त के होंठ हमें छू लेंगे
अनकहे बोल हैं गा लो हमको

हमारा दिल सवेरे का सुनहरा जाम हो जाए
चिराग़ों की तरह आँखें जलें जब शाम हो जाए

अज़ल[1] से इब्तिदाए[2] अर्ज़े दिल है और तुम चुप हो
जहाँ पर मुस्कुरा के हाँ कहो, अंजाम हो जाए

मिसाले गुंचा[3] खुलते लब के जैसे सुबह होती है
अगर खामोश हो जाए सुकूत[4] शाम हो जाए

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िन्दगी की शाम हो जाए

---

1. आरंभ, 2. अंत, 3. फूल की तरह, 4. शांतिपूर्ण

तारों भरी पलकों की बरसाई हुई ग़ज़लें
है कौन पिरोए जो बिखराई हुई ग़ज़लें

वो लब हैं कि दो मिसरे और दोनों बराबर के
ज़ुल्फ़ें कि दिले शायर पे छाई हुई ग़ज़लें

ये फूल हैं या शेरों ने सूरतें पाई हैं
शाख़ें हैं कि शबनम में नहलाई हुई ग़ज़लें

खुद अपनी ही आहट पर चौंके हों हिरन जैसे
यूँ राह में मिलती हैं घबराई हुई ग़ज़लें

इन लफ़्जों की चादर को सरकाओ तो देखोगे
एहसास के घूँघट में शर्माई हुई ग़ज़लें

उस जाने-तग़ज्जुल[1] ने जब भी कहा कुछ कहिए
मैं भूल गया अक्सर याद आई हुई ग़ज़लें

---

1. ग़ज़ल की जान (प्रेमिका)

महफ़िलें मैकशाँ[1] कूचए दिलबराँ[2]
हर जगह हो लिए, अब चले दिल कहाँ

मसलहत[3] चाहती है कि मंज़िल मिले
और दिल ढूँढ़ता है कोई कारवाँ

तज़किरा[4] कोई हो, ज़िक्र तेरा रहा
अव्वलो-आख़रिश[5], दरमयाँ दरमयाँ

रात यूँ दिल में फिर तुमने आवाज़ दी
जैसे सहरा की मस्जिद में शब की अज़ाँ

गर्द आलूद[6] चेहरे पे हैरत न कर
दश्त दर दश्त घूमी है उम्रे रवाँ

'बद्र' साहब उधर का न रुख़ कीजिए
दिल्ली, लाहौर हैं शहरे जादूगराँ

---

1. शराबी, 2. प्रिय, 3. नीति, 4. चर्चा, 5. शुरू से आख़िर तक, 6. मलिन

कहीं चाँद राहों में खो गया
कहीं चाँदनी भी भटक गई
मैं चराग़ वो भी बुझा हुआ
मेरी रात कैसे चमक गई

मेरी दास्ताँ का उरूज[1] था
तेरी नर्म पलकों की छाँव में
मेरे साथ था तुझे जागना,
तेरी आँख कैसे झपक गई

भला हम मिले भी तो क्या मिले,
वही दूरियाँ वही फ़ासले
न कभी हमारे क़दम बढ़े
न कभी तुम्हारी झिझक गई

तेरे हाथ से मेरे होंठ तक
वही इन्तज़ार की प्यास है
मेरे नाम की जो शराब थी
कहीं रास्ते में छलक गई

तुझे भूल जाने की कोशिशें
कभी कामयाब न हो सकीं
तेरी याद शाख़े गुलाब है,
जो हवा चली तो लचक गई

1. उत्कर्ष, क्लाइमेक्स

लहरों में डूबते रहे दरिया नहीं मिला
उससे बिछड़ के फिर कोई वैसा नहीं मिला

वो भी बहुत अकेला है शायद मेरी तरह
उसको भी कोई चाहने वाला नहीं मिला

साहिल पे कितने लोग मेरे साथ-साथ थे
तूफाँ की ज़द[1] में आया तो तिनका नहीं मिला

दो चार दिन तो कितने सुकूँ से गुज़र गए
सब ख़ैरियत रही, कोई अपना नहीं मिला

---

1. चोट

रात से जी है सोगवार[1] बहुत
याद आओ न आज यार बहुत

पाँव में दम रहे, दयार[2] बहुत
हाथ चलते हों, रोज़गार बहुत

दिल में हर वक्त एक हंगामा
शहर तन्हा है शहरे यार बहुत

देख लीं मेहरबानियाँ तेरी
ज़िन्दगी बन न ग़मगुसार[3] बहुत

क्या कोई यार आने वाला है
वक़्त पूछे हो आज यार बहुत

रात कहती है ‘बद्र’ सो जाओ
हो चुका उसका इन्तज़ार बहुत

---

1. दुखी, 2. दरवाज़ा, 3. दुख में शामिल

न जी भर के देखा, न कुछ बात की
बड़ी आरज़ू थी मुलाक़ात की

मैं चुप था तो चलती हवा रुक गई
ज़ुबाँ सब समझते हैं जज़्बात की

मुक़द्दर मेरी चश्मे पुर-आब[1] का
बरसती हुई रात बरसात की

कई साल से कुछ ख़बर ही नहीं
कहाँ दिन गुज़ारा कहाँ रात की

1. आँसू भरी आँखें

निकल आए इधर जनाब कहाँ
रात के वक़्त आफ़ताब कहाँ

मेरी आँखें किसी के आँसू हैं
वरना इन पत्थरों में आब कहाँ

सब खिले हैं किसी के आरिज़[1] पर
इस बरस बाग़ में गुलाब कहाँ

मेरे होंठों पे तेरी ख़ुशबू है
छू सकेगी इन्हें शराब कहाँ

1. गाल

आँसुओं से धुली ख़ुशी की तरह
रिश्ते होते हैं शायरी की तरह

हम ख़ुदा बन के आएँगे वरना
हमसे मिल जाओ आदमी की तरह

बर्फ़ सीने की जैसे जैसे गली
आँख खुलती गई कली की तरह

जब कभी बादलों में घिरता है
चाँद लगता है आदमी की तरह

किसी रोज़न[1] किसी दरीचे से
सामने आओ रोशनी की तरह

सब नज़र का फ़रेब है वरना
कोई होता नहीं किसी की तरह

ख़ूबसूरत उदास ख़ौफ़ज़दा
वो भी है बीसवीं सदी की तरह

जानता हूँ कि एक दिन मुझको
वो बदल देगा डायरी की तरह

---

1. खिड़की

मुस्कुराते रहे ग़म छुपाते रहे
महफ़िलों महफ़िलों गुनगुनाते रहे
मौत के तीराओ तार[1] श्मशान में,
जिन्दगी के कँवल जगमगाते रहे

ग़ज़लें कुम्ला गईं, नज़्में मुरझा गईं,
गीत सँवला गए, साज़ चुप हो गए
फिर भी अहले चमन कितने ख़ुश तबा
थे, नग़मए फ़सले गुल[2] गुनगुनाते रहे

तेरी साँसों की ख़ुशबू, लबों की महक
जाने कैसे हवाएँ उड़ा लाई थीं
रात का हर क़दम कुछ बहकता रहा,
वक्त के पाँव भी डगमगाते रहे

जैसे कश्मीरी झीलों की आग़ोश में
नन्हे नन्हे सितारे उतर आए हों
रात उन नीली आँखों में कुछ ऐसे ही
आँसुओं के दिए झिलमिलाते रहे

शाहिदे[3] ज़िन्दगी तूने भूले से भी
हम ग़रीबों की जानिब न देखा कभी
और हम तो तेरी अज़मतों[4] के लिए
सर कटाते रहे जाँ गँवाते रहे

---

1. अँधेरा, 2. बहार का गीत, 3. महबूब, 4. फ़साद (यहाँ रोमाँस के अर्थ में प्रयुक्त)

दिल की दहलीज़ पे यादों के दिए रक्खे हैं
आज तक हमने ये दरवाज़े खुले रक्खे हैं

इस कहानी के वो किरदार कहाँ से लाऊँ
वही दरिया है वही कच्चे घड़े रक्खे हैं

हम पे जो गुज़री, बताया न बताएँगे कभी
कितने ख़त अब भी तेरे नाम लिखे रक्खे हैं

आपके पास ख़रीदारी की कुव्वत[1] है अगर
आज सब लोग दुकानों में सजे रक्खे हैं

1. ताक़त

हमारे हाथों में एक शक्ल चाँद जैसी थी
तुम्हें ये कैसे बताएँ वो रात कैसी थी

महक रहे थे मेरे होंठ उसकी ख़ुशबू से
अजीब आग थी बिल्कुल गुलाब जैसी थी

इसी में सब थे, मेरी माँ, बहन भी, बीवी भी
समझ रहा था जिसे मैं वो ऐसी वैसी थी

तुम्हारे घर के सभी रास्तों को काट गई
हमारे साथ में कोई लकीर ऐसी थी

मुहब्बतों में दिखावे की दोस्ती न मिला
अगर गले नहीं मिलता तो हाथ भी न मिला

घरों पे नाम थे, नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया, कोई आदमी न मिला

तमाम रिश्तों को मैं घर पे छोड़ आया था
फिर उसके बाद मुझे कोई अजनबी न मिला

ख़ुदा की इतनी बड़ी कायनात में मैंने
बस एक शख़्स को माँगा, मुझे वही न मिला

बहुत अजीब है ये क़ुरबतों[1] की दूरी भी
वो मेरे साथ रहा और मुझे कभी न मिला

1. नज़दीकियाँ

ख़ुदा हमको ऐसी ख़ुदाई न दे
कि अपने सिवा कुछ दिखाई न दे

मुझे ऐसी जन्नत नहीं चाहिए
जहाँ से मदीना दिखाई न दे

मुझे अपनी चादर में यूँ ढाँप लो
ज़मीं आसमाँ कुछ दिखाई न दे

मैं अश्कों से नामे मोहम्मद लिखूँ
क़लम छीन ले, रोशनाई न दे

ग़ुलामी को बरकत समझने लगें
असीरों[1] को ऐसी रिहाई न दे

ख़ुदा ऐसे अहसास का नाम है
रहे सामने और दिखाई न दे

1. ग़ुलामों

किसे ख़बर थी तुझे इस तरह सजाऊँगा
ज़माना देखेगा और मैं न देख पाऊँगा

हयातो[1] मौत फिराक़ो[2] विसाल[3] सब यकजा[4]
मैं एक रात में कितने दिए जलाऊँगा

पला बढ़ा हूँ अभी तक इन्हीं अन्धेरों में
मैं तेज़ धूप से कैसे नज़र मिलाऊँगा

मेरे मिज़ाज की ये मादराना[5] फ़ितरत[6] है
सवेरे सारी अज़ीयत[7] मैं भूल जाऊँगा

तुम एक पेड़ से वाबस्ता हो मगर मैं तो
हवा के साथ बहुत दूर-दूर जाऊँगा

मेरा ये अहद[8] है मैं आज शाम होने तक
जहाँ से रिज़्क[9] लिखा है, वहीं से लाऊँगा

---

1. जिंदगी, 2. बिछोह, 3. मिलाप, 4. एक साथ, 5. जन्मजात, 6. स्वभाव, 7. कष्ट, 8. प्रतिज्ञा, 9. रोज़ी रोटी

कोई न जान सका वो कहाँ से आया था
और उसने धूप से बादल को क्यों मिलाया था

ये बात लोगों को शायद पसन्द आई नहीं
मकान छोटा था लेकिन बहुत सजाया था

वो अब वहाँ है जहाँ रास्ते नहीं जाते
मैं जिसके साथ यहाँ पिछले साल आया था

सुना है उस पे चहकने लगे परिन्दे भी
वो एक पौधा जो हमने कभी लगाया था

चराग़ डूब गए कपकपाए होठों पर
किसी का हाथ हमारे लबों तक आया था

बदन को छोड़ के जाना है आसमाँ की तरफ़
समन्दरों ने हमें ये सबक़ पढ़ाया था

तमाम उम्र मेरा दम इसी धुएँ में घुटा
वो इक चिराग़ था मैंने उसे बुझाया था

हर रोज़ हमें मिलना हर रोज़ बिछड़ना है
मैं रात की परछाईं तू सुबह का चेहरा है

आलम का ये सब नक़्शा बच्चों का घरौंदा है
इक ज़र्रे के क़ब्ज़े में सहमी हुई दुनिया है

हमराह चलो मेरे या राह से हट जाओ
दीवार के रोके से दरिया कहीं रुकता है

ख़ुश रहे या बहुत उदास रहे
ज़िन्दगी तेरे आस-पास रहे

वो नहीं है तो उसकी आस रहे
एक जाए तो एक पास रहे

जब भी कसने लगा, उतार दिया
इस बदन में कई लिबास रहे

घुल गए अपनी बदनसीबी में
वो सितारे जो अपने पास रहे

आज हम सबके साथ ख़ूब हँसे
और फिर देर तक उदास रहे

दोनों एक दूसरे का मुँह देखें
आईना आईने के पास रहे

किसने मुझको सदा दी, बता कौन है
ऐ हवा तेरे घर में छुपा कौन है

बारिशों में किसी पेड़ को देखना
शाल ओढ़े हुए भीगता कौन है

ख़ुशबुओं में नहाई हुई शाख़ पर
फूल सा मुस्कराता हुआ कौन है

मैं यहाँ धूप में तप रहा हूँ मगर
वो पसीने में डूबा हुआ कौन है

दिल को पत्थर हुए इक ज़माना हुआ
इस मकाँ में मगर बोलता कौन है

आसमानों को हमने बताया नहीं
डूबती शाम में डूबता कौन है

तुम भी मजबूर हो हम भी मजबूर हैं
बेवफ़ा कौन है, बावफ़ा कौन है

हर बात में महके हुए जज़्बात की खुशबू
याद आई बहुत पहली मुलाक़ात की खुशबू

छुप छुप के नई सुबह का मुँह चूम रही है
इन रेशमी ज़ुल्फ़ों में बसी रात की ख़ुशबू

मौसम भी हसीनों की अदा सीख गए हैं
बादल हैं छुपाए हुए बरसात की ख़ुशबू

घर कितने ही छोटे हों, घने पेड़ मिलेंगे
शहरों से अलग होती है क़स्बात की ख़ुशबू

होंठों पे अभी फूल की पत्ती की महक है
साँसों में रची है तेरी सौग़ात की खुशबू

पत्थर के जिगर वालो, ग़म में वो रवानी है
ख़ुद राह बना लेगा बहता हुआ पानी है

फूलों में ग़ज़ल रखना ये रात की रानी है
उसमें तेरी ज़ुल्फ़ों की बेरब्त[1] कहानी है

इक ज़हने परेशाँ में वो फूल सा चेहरा है
पत्थर की हिफ़ाजत में शीशे की जवानी है

क्यों चाँदनी रातों में दरिया पे नहाते हो
सोये हुए पानी में क्या आग लगानी है

इस हौसलए दिल पर हमने भी कफ़न पहना
हँसकर कोई पूछेगा क्या जान गँवानी है

रोने का असर दिल पर रह रह के बदलता है
आँसू कभी शीशा है, आँसू कभी पानी है

ये शबनमी लहज़ा है आहिस्ता ग़ज़ल पढ़ना
तितली की कहानी है, फूलों की ज़ुबानी है

---

1. बेतरतीब

दूसरों को हमारी सज़ाएँ न दे
चाँदनी रात को बद्दुआएँ न दे

फूल से आशिक़ी का हुनर सीख ले
तितलियाँ ख़ुद रुकेंगी, सदाएँ न दे

सब गुनाहों का इक़रार करने लगे
इस क़दर ख़ूबसूरत सज़ाएँ न दे

मैं दरख़्तों की सफ़[1] का भिखारी नहीं
बेवफ़ा मौसमों की क़बाएँ[2] न दे

मोतियों को छुपा सीपियों की तरह
बेवफ़ाओं को अपनी वफ़ाएँ न दे

मैं बिखर जाऊँगा आँसुओं की तरह
इस क़दर प्यार से बद्दुआएँ न दे

---
1. पंक्ति, 2. चोग़ा

इस तरह दुनिया मिली शिकवा गिला कोई नहीं
मैं समझता था मेरा तेरे सिवा कोई नहीं

ख़त नहीं हूँ जिस पे तुम राहों की तफ़्सीलें[1] लिखो
उसके घर जाऊँगा मैं जिसका पता कोई नहीं

ऐसा लगता है कि तू मुझसे जुदा हो जाएगा
इस बड़े शहरे-वफ़ा में बेवफ़ा कोई नहीं

मैं पयम्बर[2] तो नहीं लेकिन मुझे एहसास है
इन बुरे लोगों में भी मुझसे बुरा कोई नहीं

---

1. विस्तृत वर्णन, 2. संदेशवाहक

होंठों पे मुहब्बत के फ़साने नहीं आते
साहिल पे समन्दर के ख़ज़ाने नहीं आते

पलकें भी चमक उठती हैं सोते में हमारी
आँखों को अभी ख़्वाब छुपाने नहीं आते

दिल उजड़ी हुई एक सराय की तरह है
अब लोग यहाँ रात बिताने नहीं आते

यारो नए मौसम ने ये एहसान किए हैं
अब याद मुझे दर्द पुराने नहीं आते

उड़ने दो परिन्दों को अभी शोख़[1] हवा में
फिर लौट के बचपन के ज़माने नहीं आते

इस शहर के बादल तेरी ज़ुल्फ़ों की तरह हैं
ये आग लगाते हैं, बुझाने नहीं आते

अहबाब[2] भी ग़ैरों की अदा सीख गए हैं
आते हैं मगर दिल को दुखाने नहीं आते

---

1. चंचल, 2. दोस्त

सँवार नोक पलक अबरुओं[1] में ख़म कर दे
गिरे पड़े हुए लफ़्ज़ों को मोहतरम[2] कर दे

ग़ुरूर उस पे बहुत सजता है मगर कह दो
इसी में उसका भला है ग़ुरूर कम कर दे

यहाँ लिबास की क़ीमत है आदमी की नहीं
मुझे गिलास बड़े दे, शराब कम कर दे

चमकने वाली है तहरीर मेरी क़िस्मत की
कोई चिराग़ की लौ को ज़रा सा कम कर दे

किसी ने चूम के आँखों को ये दुआ दी थी
ज़मीन तेरी ख़ुदा मोतियों से नम कर दे

1. भवें, 2. सम्माननीय

कोई लश्कर है कि बढ़ते हुए ग़म आते हैं
शाम के साये बहुत तेज़-क़दम आते हैं

दिल वो दरवेश जो आँख उठाता ही नहीं
इसके दरवाज़े पे सौ अहले-करम[1] आते हैं

मुझसे क्या बात लिखानी है कि अब मेरे लिए
कभी सोने कभी चाँदी के क़लम आते हैं

मैंने दो चार किताबें तो पढ़ी हैं लेकिन
शहर के तौर-तरीक़े मुझे कम आते हैं

ख़ूबसूरत सा कोई हादसा आँखों में लिए
घर की दहलीज़ पे डरते हुए हम आते हैं

---

1. कृपा करने वाले

उदास आँखों से आँसू नहीं निकलते हैं
ये मोतियों की तरह सीपियों में पलते हैं

घने धुएँ में फ़रिश्ते भी आँख मलते हैं
तमाम रात खजूरों के पेड़ जलते हैं

मैं शाहराह[1] नहीं रास्ते का पत्थर हूँ
यहाँ सवार भी पैदल उतर के चलते हैं

उन्हें कभी न बताना मैं उनकी आँखें हूँ
वो लोग फूल समझ कर मुझे मसलते हैं

कई सितारों को मैं जानता हूँ बचपन से
कहीं भी जाऊँ मेरे साथ चलते हैं

ये एक पेड़ है, आ इससे मिल के रो लें हम
यहाँ से तेरे मेरे रास्ते बदलते हैं

---

1. राजमार्ग

आँखों में रहा दिल में उतर कर नहीं देखा
किश्ती के मुसाफ़िर ने समन्दर नहीं देखा

बेवक़्त अगर जाऊँगा सब चौंक पड़ेंगे
इक उम्र हुई दिन में कभी घर नहीं देखा

जिस दिन से चला हूँ मेरी मंज़िल पे नज़र है
आँखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा

ये फूल मुझे कोई विरासत में मिले हैं
तुमने मेरा काँटों भरा बिस्तर नहीं देखा

पत्थर मुझे कहता है मेरा चाहने वाला
मैं मोम हूँ, उसने मुझे छूकर नहीं देखा

चमक रही है परों में उड़ान की ख़ुशबू
बुला रही है बहुत आसमान की ख़ुशबू

भटक रही है पुरानी दुलाइयाँ ओढ़े
हवेलियों में मेरे ख़ानदान की ख़ुशबू

सुना के कोई कहानी हमें सुलाती थी
दुआओं जैसी बड़े पानदान की ख़ुशबू

दबा था फूल कोई मेज़पोश के नीचे
गरज रही थी बहुत पेचवान[1] की ख़ुशबू

अजब वक़ार[2] था सूखे सुनहरे बालों में
उदासियों की चमक ज़र्द[3] लान की ख़ुशबू

वो इत्रदान सा लहज़ा मेरे बुज़ुर्गों का
रची बसी हुई उर्दू ज़बान की ख़ुशबू

ख़ुदा का शुक्र है मेरे जवान बेटे के
बदन से आने लगी है ज़ाफ़रान की खुशबू

इमारतों की बुलन्दी पे कोई मौसम क्या
कहाँ से आ गई कच्चे मकान की खुशबू

गुलों पे लिखती हुई ला इलाह इल लल्लाह[4]
पहाड़ियों से उतरती अज़ान की ख़ुशबू

---

1. हुक्का, 2. इज़्ज़त, 3. पीला, 4. ईश्वर के अलावा कोई दूसरा पूज्य नहीं

हँसी मासूम सी बच्चों की कापी में इबारत[1] सी
हिरन की पीठ पर बैठे परिन्दे की शरारत सी

वो जैसे सर्दियों में गर्म कपड़े दे फ़क़ीरों को
लबों पे मुस्कुराहट थी मगर कैसी हिक़ारत[2] सी

उदासी पतझड़ों की शाम ओढ़े रास्ता तकती
पहाड़ी पर हज़ारों साल की कोई इमारत सी

सजाए बाज़ुओं पर बाज़ वो मैदाँ में तनहा था
चमकती थी ये बस्ती धूप में ताराज ओ ग़ारत[3] सी

मेरी आँखों, मेरे होंठों पे ये कैसी तमाज़त[4] है
कबूतर के परों की रेशमी उजली हरारत सी

खिला दे फूल मेरे बाग़ में पैग़म्बरों जैसा
रक़म[5] हो जिसकी पेशानी पे इक आयत बशारत[6] सी

---

1. लेख, 2. घृणा, 3. लूटमार और बरबादी, 4. गर्मी, 5. लिखित, 6. खुश खबरी

अँधेरे रास्तों में यूँ तेरी आँखें चमकती हैं
ख़ुदा की बरकतें जैसे पहाड़ों पर उतरती हैं

मुहब्बत करने वाले जब कभी आँसू बहाते हैं
दिलों के आईने धोती हुई पलकें सँवरती हैं

धुआँ सी बदलियों को देखकर अक्सर वो कहती है
हमेशा चाँदनी में बेवफ़ा रूहें भटकती हैं

हमारी ज़िन्दगी में फूल बनकर कोई आया था
उसी की याद में अब तक ये तहरीरें महकती हैं

मूझे लगता है दिल खिंच कर चला आता है हाथों पर
तुझे लिक्खूँ तो मेरी उँगलियाँ ऐसी धड़कती हैं

आँधियों के साथ क्या मन्ज़र सुहाने आए हैं
आज मैदानों में बाग़ों के ख़ज़ाने आए हैं

अब मेरे तलवों के नीचे की ज़मीं आज़ाद है
आसमानों से मुझे बादल बुलाने आए हैं

रेत से दरिया अटे हैं ख़ाक से झीलें पटीं
ये परिन्दे ख़ून में शायद नहाने आए हैं

ख़्वाब जिस दिल में रहा करते थे कब का मर चुका
किसका दरवाज़ा ये बच्चे खटखटाने आए हैं

इनमें रोशन हैं अभी तक तेरे बोसों[1] के चिराग़
इसलिए हम अपनी आँखें ख़ुद बुझाने आए हैं

गिरती दीवारों से लगकर दीमकों के क़ाफ़ले
कुछ सहीफ़े[2] अपनी आँखों से लगाने आए हैं

आज हम सब एक बेहतर ज़िन्दगी की दौड़ में
कैसे कैसे ख़्वाब क़ब्रों में सुलाने आए हैं

बारहा इस घर का बटवारा हुआ और आज तक
अपने हिस्से में सदा दुख के ख़जाने आए हैं

चार दुश्मन आ मिले हैं रात की छत के तले
मुद्दतों के बाद फिर अगले ज़माने आए हैं

---

1. चुंबन, 2. किताबें

उनको आईना बनाया धूप का चेहरा मुझे
रास्ता फूलों का सबको आग का दरिया मुझे

चाँद चेहरा, ज़ुल्फ़ दरिया, बात ख़ुशबू, दिल चमन
इक तुम्हें देकर ख़ुदा ने दे दिया क्या-क्या मुझे

जिस तरह वापस कोई ले जाए अपनी चिट्ठियाँ
जाने वाला इस तरह से कर गया तन्हा मुझे

तुमने देखा है किसी मीरा को मन्दिर में कभी
एक दिन उसने ख़ुदा से इस तरह माँगा मुझे

मेरी मुट्ठी में सुलगती रेत रखकर चल दिया
कितनी आवाज़ें दिया करता था ये दरिया मुझे

सर पे साया सा दस्ते दुआ[1] याद है
अपने आँगन में इक पेड़ था याद है

जिसमें अपनी परिन्दों सी तसबीह[2] थी
तुमको स्कूल की वो दुआ याद है

ऐसा लगता है हर इम्तहाँ के लिए
ज़िन्दगी को हमारा पता याद है

मैकदे[3] में अज़ाँ सुन के रोया बहुत
इस शराबी को दिल से ख़ुदा याद है

मैं पुरानी हवेली का परदा, मुझे
कुछ कहा याद है कुछ सुना याद है

---

1. दुआ का हाथ, 2. उपमा, 3. शरावख़ाना

इक शहर था ख़राब जहाँ कोई भी न था
हम लौट आए हम सा वहाँ कोई भी न था

लौ की तरह चिराग़ का क़ैदी नहीं हूँ मैं
अच्छा हुआ कि अपना मकाँ कोई भी न था

दिल पर जमी थीं गर्दे-सफ़र[1] की कई तहें
काग़ज़ पे उँगलियों का निशाँ कोई भी न था

वह महफ़िलों की जान है दुनिया के वास्ते
मुझ से वहाँ मिला था जहाँ कोई भी न था

सन्नाटे आए, दर्जों में झाँका, चले गए
गर्मी की छुट्टियाँ थी वहाँ कोई भी न था

---

1. यात्रा की धूल

बड़े ताजिरों[1] की सताई हुई
ये दुनिया दुल्हन है जलाई हुई

भरी दोपहर का खिला फूल है
पसीने में लड़की नहाई हुई

किरन फूल की पत्तियों में दबी
हँसी उसके होंठों पे आई हुई

वो चेहरा किताबी रहा सामने
बड़ी ख़ूबसूरत पढ़ाई हुई

उदासी बिछी है बड़ी दूर तक
बहारों की बेटी पराई हुई

ख़ुशी हम ग़रीबों की जैसे मियाँ
मज़ारों पे चादर चढ़ाई हुई

---

1. सौदागरों

दुआ करो कि ये पौधा सदा हरा ही लगे
उदासियों में भी चेहरा खिला खिला ही लगे

अजीब शख़्स है नाराज़ हो के हँसता है
मैं चाहता हूँ ख़फ़ा हो तो वो ख़फ़ा ही लगे

वो ज़ाफ़रानी पुलोवर उसी का हिस्सा है
कोई जो दूसरा पहने तो दूसरा ही लगे

नहीं है मेरे मुक़द्दर में रोशनी, न सही
ये खिड़की खोलो ज़रा सुबह की हवा ही लगे

सौ ख़ुलूस[1] बातों में सब करम ख़यालों में
बस ज़रा वफ़ा कम है तेरे शहर वालों में

पहली बार नज़रों ने चाँद बोलते देखा
हम जवाब क्या देते, खो गए सवालों में

रात तेरी यादों ने दिल को इस तरह छेड़ा
जैसे कोई चुटकी ले नर्म नर्म गालों में

यूँ किसी की आँखों में सुबह तक अभी थे हम
जिस तरह रहे शबनम फूल के प्यालों में

मेरी आँख के तारे अब न देख पाओगे
रात के मुसाफ़िर थे खो गए उजालों में

---

1. शिष्टता

वो महकती पलकों की ओट से कोई तारा चमका था रात में
मेरी बन्द मुट्ठी न खोलिए वही कोहेनूर है हाथ में

मैं तमाम तारे उठा-उठा के ग़रीब लोगों में बाँट दूँ
कभी एक रात वो आसमाँ का निज़ाम[1] दें मेरे हाथ में

अभी शाम तक मेरे बाग़ में कहीं कोई फूल खिला न था
मुझे ख़ुशबुओं में बसा गया तेरा प्यार एक ही रात में

तेरे साथ इतने बहुत से दिन तो पलक झपकते गुज़र गए
हुई शाम खेल ही खेल में, गई रात बात ही बात में

कोई इश्क़ है कि अकेला रेत की शाल ओढ़ के चल दिया
कभी बाल-बच्चों के साथ आ ये पहाड़ लगता है रात में

कभी सात रंगों का फूल हूँ, कभी धूप हूँ कभी धूल हूँ
मैं तमाम कपड़े बदल चुका तेरे मौसमों की बरात में

1. इंतज़ाम

सोये कहाँ थे, आँखों ने तकिये भिगोये थे
हम भी कभी किसी के लिए ख़ूब रोये थे

अँगनाई में खड़े हुए बेरी के पेड़ से
वो लोग चलते वक़्त गले मिल के रोये थे

हर साल ज़र्द फूलों का इक क़ाफ़ला रुका
उसने जहाँ पे धूल अटे पाँव धोए थे

इस हादसे से मेरा तआल्लुक़ नहीं कोई
मेले में एक साल कई बच्चे खोये थे

आँखों की किश्तियों में सफ़र कर रहे हैं वो
जिन दोस्तों ने दिल के सफ़ीने[1] डुबोये थे

कल रात मैं था, मेरे अलावा कोई न था
शैतान मर गया था, फ़रिश्ते भी सोये थे

---

1. नावें

आँसुओं के साथ सब कुछ बह गया
दिल में सन्नाटा सा बाक़ी रह गया

छोड़ आया हूँ ज़मीनो - आसमाँ
फ़ासला अब और कितना रह गया

रफ़्ता रफ़्ता बुझ गए सारे चराग़
एक चेहरा झिलमिलाता रह गया

बस्तियाँ धुँधला गईं, फिर खो गईं
रोशनी का शहर पीछे रह गया

कहाँ आँसुओं को ये सौग़ात होगी
नए लोग होंगे नई बात होगी

मैं हर हाल में मुस्कुराता रहूँगा
तुम्हारी मुहब्बत अगर साथ होगी

चराग़ों को आँखों में महफ़ूज़ रखना
बड़ी दूर तक रात ही रात होगी

परेशाँ हो तुम भी, परेशाँ हूँ मैं भी
चलो मैकदे में, वहीं बात होगी

चराग़ों की लौ से सितारों की ज़ौ[1] तक
तुम्हें मैं मिलूँगा जहाँ रात होगी

जहाँ वादियों में नए फूल आए
हमारी तुम्हारी मुलाक़ात होगी

सदाओं को अल्फाज़ मिलने न पाएँ
न बादल घिरेंगे न बरसात होगी

मुसाफ़िर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी
किसी मोड़ पर फिर मुलाक़ात होगी

---

1. आभा

राहों में कौन आया गया कुछ पता नहीं
उसको तलाश करते रहे जो मिला नहीं

बेआस खिड़कियाँ हैं, सितारे उदास हैं
आँखों में आज नींद का कोसों पता नहीं

मैं चुप रहा तो और ग़लतफ़हमियाँ बढ़ीं
वो भी सुना है उसने जो मैंने कहा नहीं

दिल में इसी तरह से है बचपन की एक याद
शायद अभी कली को हवा ने छुआ नहीं

चेहरे पे आँसुओं ने लिखी हैं कहानियाँ
आईना देखने का मुझे हौसला नहीं

सूरज, चन्दा जैसी जोड़ी हम दोनों
दिन का राजा रात की रानी हम दोनों

जगमग जगमग दुनिया का मेला झूठा
सच्चा सोना सच्ची चाँदी हम दोनों

इक दूजे से मिलकर पूरे होते हैं
आधी आधी एक कहानी हम दोनों

घर घर दुख सुख का इक दीपक जले बुझे
हर दीपक में तेल और बाती हम दोनों

दुनिया की ये माया कंकर पत्थर है
आँसू, शबनम, हीरा, मोती हम दोनों

चारों ओर समुन्दर बढ़ती चिन्ताएँ
लहर लहर लहराती कश्ती हम दोनों

परबत परबत बादल बादल किरन किरन
उजले पर वाले दो पंछी हम दोनों

मैं दहलीज़ का दीपक हूँ, आ तेज़ हवा
रात गुज़ारें अपनी अपनी हम दोनों

उसकी आँखों सा उसके गेसू सा
मेरा सारा कलाम ख़ुशबू सा

मेरी पलकों पे झिलमिलाता है
रात भर एक नाम जुगनू सा

कितनी मुद्दत के बाद तुझसे मिले
मुस्कुराता है प्यार आँसू सा

आज वादा किसी का टूट गया
रेशमी तितलियों के बाज़ू सा

रोज़ तन्हाइयों में इक चेहरा
तौलता है मुझे तराज़ू सा